जनवरी-2014 ◆ वर्ष 2 ◆ अंक 8 ◆ उदयपुर

ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

जनवरी-२०१४

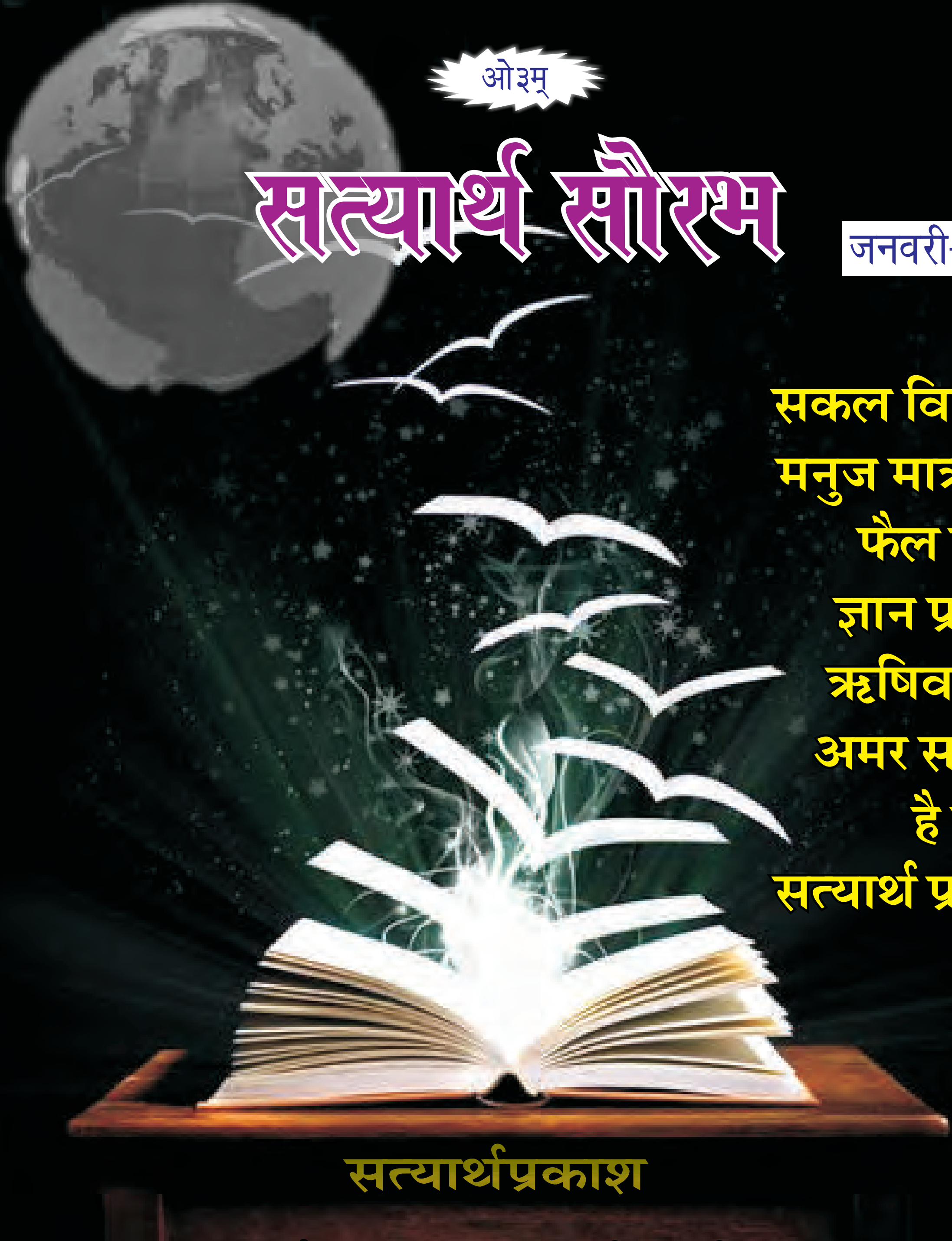


सकल विश्व में
मनुज मात्र तक
फैल रहा है
ज्ञान प्रकाश
ऋषिवर तेरी
अमर साधना
है प्यारा
सत्यार्थ प्रकाश

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० २५

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
Garam masala
Sambhar masala
Chunky Chat masala
Shahi Paneer masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
Dal Makhani masala
Kitchen King
Chana masala
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

# सत्यार्थ सौरभ


**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**

महाशय धर्मपाल जी ( एम.डी.एच. )
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**

अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**

भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग**

नवनीत आर्य

**व्यवस्थापक**

सुरेश पाटोदी ( मो.9829063110 )


| सहयोग ◆ भारत | विदेश |
|---|---|
| संरक्षक - ११००० रु. | $ 1000 |
| आजीवन - ५००० रु. | $ 250 |
| पंचवर्षीय - ४०० रु. | $ 100 |
| वार्षिक - १०० रु. | $ 25 |
| एक प्रति - १० रु. | $ 5 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११४
उत्तरभाद्रपद सप्तमी
विक्रम संवत्
२०७०
दयानन्दाब्द
१८९


सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।


**January - 2014**


**विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)**

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | २००० रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | १००० रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | ७५० रु. |

एक वाक्य क्या नहीं कर सकता


| | |
|---|---|
| वेद सुधा | ०४ |
| भारत और प्रजातंत्र | ०६ |
| Mumbai Police Commissionor Dr. Satya Pal Singh | ११ |
| आयुर्वेदाचार्य महर्षि चरक | १३ |
| भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार | १४ |
| अभिवादनशीलता व शिष्टाचार | १७ |
| गीता एक विजय ग्रन्थ | २१ |
| समाचार | २३ |
| हलचल | २४ |
| शतरंज राजतन्त्र प्रजातन्त्र | २५ |
| दयानन्दीय शिक्षानीति | २६ |
| मकर संक्रान्तिः- संकरातड़ा | २७ |
| बेटी की करुण पुकार | २८ |
| आयुर्वेदिक दोहे | २९ |
| कथा सरित | ३० |



स्वामी: श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - २ अंक - ८

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

**प्रकाशक**

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ९३१४५३५३७९, ९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

# वेद सुधा

## दण्डविधान हिंसा नहीं

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् ।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ॥ -अथर्व. १/१६/४ गतांक से आगे .........

वेद में जहाँ प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखने के बार-बार निर्देश दिये गये हैं- 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ।'-यजु.३६/१८, वहाँ वेद में विद्वान्-द्वेषी, मांस-भक्षी, क्रूर प्रकृतिवाले, प्रत्येक कार्य में कुतर्क करनेवाले-कुकर्मी, एवं पाप की प्रशंसा करनेवालों को विशेष मन्युबल से सन्तप्त करने, बाण से बींध देने, बन्धन में डाल दण्ड देने तथा अंग-भंग करने या मार देने तक के आदेश मिलते हैं-

'ब्रह्मद्विषे कव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायं किमीदिने । -अथर्व.८/४/२
(अथर्व. ८/४/१-२५ भी द्रष्टव्य हैं )

जो वीर-पुरुष, क्रूर-हिंसकों को मारता है उसके लिए प्रतापी (शुक्रशोचिः), अमर, पवित्र, शुद्ध करनेवाला, स्तुति करने योग्य, अग्नि के समान तेजस्वी, मित्र, विप्र सखा आदि विशेषण का प्रयोग किया गया है-
(द्रष्टव्य -अथर्व. ७/३, २०, २२, २६ इत्यादि)

शत्रुनाशन-प्रसंग में वेद के शब्दों में यदि कोई गौ, अश्व या प्रिय पुरुष को मारता है तो उसे सीसे की गोली से बींधने का विधान है।

इस प्रकार हिंसकों के नाश का अन्यत्र भी स्पष्ट विधान किया गया है-
अथर्व.दस्युनाशनम्२/१४; पिशाचक्षयणम्४/२०; मन्युशमनम्६/४३; यातुधाननाशनम् १/७/८; यातुधानक्षयणम् ६/३२; रक्षोघ्नम्१/२८,१/५/२६; क्रिमीजम्भनम् २/३१/३२;४/३७; क्रिमीघ्न ५/२३; शत्रुशमन ६/५४; ७/७०; ऋग्. ५/८७/८ इत्यादि।

वस्तुतः आसुरी वृत्तियों से उत्पन्न हिंसक कर्मों के विनाश के लिए किया गया दण्ड-विधान अहिंसा के परमोत्तम सिद्धान्त की रक्षा के लिए ही है। इसीलिए दुष्ट-शत्रुनाशक पुरुषों को मित्र=सखा कहा गया है। वेद की अहिंसा की रक्षिका हिंसा के सूक्ष्मरहस्य को न समझकर मध्यवर्ती काल में पशु-पक्षियों की हिंसा को वेदसम्मत मानने का प्रयास किया गया जिससे वेद के प्रति जनसाधारण को ग्लानि तक हो गयी, परन्तु वेद का स्पष्ट मत यही है कि अधार्मिक, पापवृत्तियों के जनक दुर्गुणों तथा घातक मनुष्यों का मानव-कल्याण के लिए अवश्य वध करना योग्य है, अर्थात् पापियों को दण्ड देना हिंसा नहीं; वेद में किया गया दण्ड-विधान अहिंसा की रक्षा के लिए है। द्रष्टव्य- अथर्व. ८/३/१२,१३ तथा १६

### अहिंसा पालन के प्रकार-

वैदिक उपासना के मार्ग पर अग्रसर उपासक विविध प्रकार से व्यवहार में अहिंसा का पालन करने को उद्यत रहता है। वह अहिंसा सेवी अन्य उपासक बन्धुओं के साथ सूर्य-चन्द्रमा के समान सदैव कल्याण तथा अहिंसा के पथ पर चलने की कामना करता है।

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ॥ -ऋग. ५/५१/१५

अहिंसा के पालन का संकुचित क्षेत्र नहीं होना चाहिए। इसलिए वेद अहिंसा का पालन, मनुष्यमात्र में नहीं, प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखकर, करने को निर्देश करता है।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ -यजु. ३६/१८

अहिंसाधर्म का पालन सत्यवक्ता, अहिंसासेवी विद्वान् के संसर्ग में ही हो सकता है–

**सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये ।** –ऋग. ३/६/१

अतः अहिंसा का पालक ऐसे विद्वानों का अपने यहाँ आह्वान करता है– **'देव्यावध्वर्यूऽआ गतम् ।'** –यजु. ३३/७३

**स्था ऊ षु ऊर्ध्व ऊती अरिषण्यन्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाम्।** –ऋग. ६/२४/६

अहिंसा का पालन किसी समयविशेष में करने से सिद्धि नहीं होती, इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती मंत्र के भावार्थ में स्पष्ट करते हैं कि 'जो यम–नियमों से युक्त होकर कार्य सिद्धि के लिए दिन–रात प्रयत्न करते हैं वे उत्तम होते हैं।' दैनिक व्यवहार में दिन–रात अहिंसा का पालन करते हुए साधक आत्मिक शक्ति=साहस को प्राप्त कर सकता है।

**अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरुतमम् ।** –ऋग. ८/१०२/७

अहिंसनीय व्यवहारों में परमात्मा विशेष रूप से प्रोत्साहित करता है।

वह परमात्मा हिंसारहित योग–यज्ञों का सम्राट् है– **सम्राजन्तमध्वराणाम् ।**–सामवेद वह अहिंसा से परिपूर्ण स्तुति–प्रार्थना को ही स्वीकार करता है। साधक अहिंसा का पालन करते–करते जब अपनी इन्द्रियों को अहिंसा में अभ्यस्त बना लेता है, तब परमात्मप्राप्ति का मार्ग उसके लिए प्रशस्त हो जाता है।

**यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वं दयन्त गोनाम् ।** –साम. ३८

साधक इन्द्रियों की हिंसक (दाहक) अग्नि के संयम से प्रभु–प्रेम को प्राप्त करते हैं।

वेदों में प्रयुक्त अध्वर; अथवा अदभा, अनेहस्, अघ्नता, अघ्न्या, तथा अदब्ध, आदि पद अहिंसा–पालन का स्पष्ट संकेत करते हैं। वेदों में अहिंसाविषयक पर्याप्त निरूपण होते हुए भी पाश्चात्य विद्वानों ने तथा उनके अनुयायी भारतीय विद्वानों ने अपनी पुस्तकों में यह मत प्रकट किया कि 'भारत में आर्य लोग गोमांस–भक्षण करते थे।'

मैक्डानल और कीथ अपनी पुस्तक 'वैदिक इण्डेक्स' में लिखते हैं कि ''वैदिक काल के भारतीयों का मांस के सम्बन्ध में भोजन का पता उन जानवरों की सूची से चलता है, जो यज्ञ में मारे जाते थे। जो मनुष्य खाते हैं वही देवताओं को बलि देते हैं, भैंस, भेड़, बकरी और बैल।' पुस्तक में दूसरे स्थान पर लिखा है कि वैदिक काल में मांस सर्वसाधारण का भोजन था।'

वेद पर लगाये गये, इस प्रकार के अनेकों आरोपों के मुख्य कारण हैं– वेदों को प्रकरणशः समझने की योग्यता का अभाव; स्वयं वेदों को न पढ़कर अन्यों के भाष्यों पर विश्वास करना तथा पाश्चात्य विद्वानों द्वारा वेद की निन्दा कर भारतीयों को वैदिक धर्म के प्रति ग्लानि उत्पन्न करने की व्यापक योजना। अहिंसा के विरुद्ध लिखने वाले इन विद्वानों का कई वैदिक विद्वानों ने युक्ति एवं प्रमाणपूर्वक निराकरण किया है। अधिक जानकारी उन ग्रन्थों से की जा सकती है; यहाँ विषयान्तरभय से संकेत मात्र अभीष्ट है।

इस प्रसंग में इतना अवश्य विचारणीय है कि– 'जब वेदों में सर्वसाधारण के लिए सामान्य रूप से अहिंसा लिखी है, पुनः हिंसा के लिए वेदों को समर्थक मानना नितान्त अज्ञता एवं धृष्टता है। इस प्रकार जब जनसाधारण के लिए वेद अहिंसाव्रत के पालन का विधान करता है तो सात्त्विक गुणाभिलाषी साधक के लिए हिंसा का प्रश्न ही नहीं होता। वेद सर्वथा अहिंसा का पक्षधर है।

– डॉ. योगेन्द्र पुरुषार्थी (क्रमशः ......)

सुन्दर विचार और श्रेष्ठ,
कर्म ही उन्नति के हैं मूल ।
इन दोनों के बल पर,
ही खिलते हैं हर्ष के फूल ॥
सत्यार्थ सौरभ
घर–घर पहुँचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

**आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार**

- न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
- वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

आत्म निवेदन

# मेकिंग ऑफ आसाराम

गुरु की महत्ता व आवश्यकता के बारे में भारतीय मनीषा कभी भी सन्देहयुक्त नहीं रही। ऋग्वेद २.१३.११ का भाष्य करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं- 'जिनको वेदों के पारंगत विद्वान् अध्यापक प्रेम से बुद्धि प्रदान करते हैं, वे कभी भी दुःखी और निन्दित नहीं होते।' अर्थात् गुरुजन दुःख व निन्दा से बचाकर सुख व यश की वृद्धि कराते हैं। यही कारण है कि हमारे देश में ऋषि मुनि विद्वान् सर्वत्र पूजित रहे। ऋषि विश्वामित्र जिस समय यज्ञ की रक्षार्थ राम-लक्ष्मण को माँगने दशरथ के पास आए थे तब दशरथ पुत्र मोह से ग्रस्त हो इस हेतु अनिच्छुक थे। परन्तु गुरु वशिष्ठ के कहने पर उन्होंने राम व लक्ष्मण को विश्वामित्र के सुपुर्द कर दिया। गुरु के पास कितने अधिकार होंगे तनिक कल्पना कीजिए कि राम का विवाह भी विश्वामित्र की स्वीकृति से तय हो गया। महाराज दशरथ को तो बाद में सूचना दी गई। भारत में आज भी गुरु गौरव का यही भाव विद्यमान है। परन्तु गुरु शिष्य के व्यक्तित्व की बात तो बाद में करेंगे, इस परम्परा का मूल उद्देश्य और उद्देश्य प्राप्ति का साधन बदल गया। जहाँ पूर्व में गुरु अपने अन्तेवासी शिष्य को ठीक उसी प्रकार सहेजते हुए जिस प्रकार कि माता गर्भस्थ शिशु को सहेजती है उसका हित साधन करती है, शिष्य का चारित्रिक विकास करते हुए, नाना प्रकार की अविद्या को दूर कर, अलंकृत कर राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक के रूप में निर्माण करता था, वह भाव आज पूर्णतः विलुप्त है। स्मरण कीजिए यदि वशिष्ठ-विश्वामित्र न होते तो क्या राम का निर्माण हो पाता? गुरु अगस्त्य न होते तो क्या हनुमान निर्मित होते? सान्दीपनि न होते तो क्या कृष्ण समस्त कलाओं के साथ चमक पाते? चाणक्य न होते तो क्या चन्द्रगुप्त चक्रवर्ती सम्राट होने की सोचता भी? यदि समर्थ गुरु रामदास न होते तो क्या शिवाजी का अस्तित्व होता? और यहाँ यह भी साथ ही विचार कर लीजिए इन महान् प्रतापी, परमैश्वर्यशाली शिष्यों को जन्म देने वाले गुरुजनों के समक्ष भौतिक सम्पदा का क्या कोई महत्व था? ये सभी राष्ट्र निर्माता पर्णकुटी में ही विराजते रहे। गुरु को ही क्यों दोष दिया जाए क्या आज के शिष्यगण ऐसे गुरु चाहते भी हैं? जब तक देश में जीवन निर्माता, निर्लोभी, चरित्रवान, मानवता के हितसाधक सन्त रहे, उनके प्रति पूज्यभाव स्वाभाविक व अपरिहार्य था। उन्हें न शिष्यों से कोई मूर्त अपेक्षाएँ थीं न राजाओं से। गुरुवर दण्डी स्वामी विरजानन्द जी ने अलवर नरेश का त्याग केवल इस कारण कर दिया कि वे एक दिन प्रमादवश निर्धारित समय पर गुरु के समक्ष नहीं पहुँचे। इन्हीं गुरु विरजानन्द ने दयानन्द के लाए लौंग अस्वीकृत कर दिए। हाँ, मानवता की भलाई हेतु, राष्ट्र के उत्थान हेतु जुट जाने का वचन अवश्य लिया। शिष्य भी ऐसे ही थे। श्रीराम, श्रीकृष्ण, हनुमान, चन्द्रगुप्त, शिवा, दयानन्द ने सारा जीवन गुरु निर्देश पर राष्ट्र व मानवता की भलाई हेतु अर्पित कर दिया। अस्तु

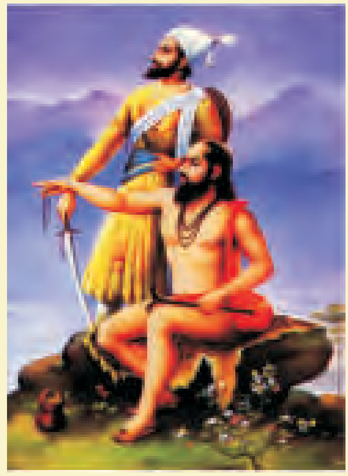

अब न वैसे गुरु हैं न शिष्य। हाँ, विरासत में गुरु के प्रति जो आदरभाव की परम्परा रही है वह अभी भी विद्यमान है (चाहे विकृत रूप में सही)। इसी श्रद्धा-आस्था का लाभ चतुर बाजीगर उठा रहे हैं। शिष्य भी गुरु से चारित्रिक निर्माण नहीं चाहते। निःसंतान शिष्य पुत्र चाहते हैं, गरीब शिष्य धन चाहता है, नेता शिष्य चुनाव में विजय चाहता है, मुकदमें में फँसा शिष्य मुकदमे में जीत चाहता है। गरज यह कि सर्व समृद्धि हेतु अध्यात्म और अष्टांग योग की शिक्षा किसी को दरकार नहीं, दर्शन, उपनिषद, वेद की शिक्षाओं पर चलने की नहीं, इन्हें चमत्कारिक टोने-टोटके की, किसी तथाकथित गुरुमंत्र की, बीजमंत्र की अथवा ऐसे चमत्कारिक हस्तस्पर्श या अन्यान्य क्रिया की आवश्यकता है जो चुटकी बजाते उनकी सारी समस्याओं का समाधान कर दे। कुछ मुक्ति सुख के अभिलाषी हो सकते हैं इससे इन्कार नहीं किया जा सकता, पर वे इसके लिए यम-नियम साधना के अभिलाषी नहीं हैं, वे आसान साधन चाहते हैं।

मोटे तौर पर आज यह स्थिति है। न शिष्य को सच्चा गुरु चाहिए और न गुरु को मुमुक्षु शिष्य। दयानन्द ने जब गुरु विरजानन्द का दरवाजा खटखटाया तो गुरु ने पूछा 'कौन हैं?' शिष्य का उत्तर था- 'भगवन्! यही तो जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ' आज के संदर्भ में ऐसे संवाद पूर्णतः अप्रासंगिक हो चुके हैं। यहीं से प्रारम्भ होती है 'मेकिंग ऑफ ए गुरु/ आसाराम/ की प्रक्रिया।

जी हाँ दोष केवल आसाराम जी या ऐसे ही अन्य गुरुओं को मत दीजिए इसके लिए जिम्मेदार मैं और आप हैं। क्या आपने गुरु-वरण से पूर्व सोचा है कि गुरु कैसा होना चाहिए? वेद में गुरु की अनेक अर्हताओं में से कुछ निम्न हैं।

जितेन्द्रिय धार्मिक, परोपकारप्रिय विद्वान् हो। (यजु. १२/५६), शुद्ध आचरण वाले, सत्यवादी महान् आत्मा वाले हों (ऋ २/४२/३), सूर्य के समान प्रकाशित आत्मा वाले, जितेन्द्रिय और सुशील हों (यजु. ३३/३४)। सन्तों को परिभाषित करते हुए कहा है कि वे योगविद्यारूपी ऐश्वर्य से सम्पन्न, सत्योपदेश से सुख उपजाने वाले, ब्रह्मनिष्ठ विद्वान् संन्यासी हों (ऋ१/११६/६), पूर्ण विद्या वाले आप्त, राग-द्वेष तथा पक्षपात से रहित, सर्वथा सत्यमय, असत्य का त्याग करने वाले, जितेन्द्रिय, योगसिद्धान्त को प्राप्त किए, पर तथा अपर के ज्ञाता,

जीवनमुक्त, वेदों के ज्ञाता हों (ऋ १।११६।८)।

अब पाठकगण स्वयं विचार करें कि गुरु का चयन करते समय क्या आप उसकी योग्यता का ध्यान रखते हैं? उपरोक्त में से कुछ प्रतिशत गुण धारण करने वाले भी यदि आचार्य हों तो पृथ्वी का वातावरण ही बदल जाय। तथाकथित जालसाज गुरुओं द्वारा यह भी प्रचारित किया जाता है कि गुरु-परीक्षा नहीं करनी चाहिए बस श्रद्धापूर्वक ग्रहण कर समर्पित हो जाना चाहिए। यह बात इसलिए प्रचारित की जाती है कि उनकी पोल न खुल जाए। जब आप १० रु. का मटका भी ठोक बजाकर खरीदते हैं तो जिसे आप अपने तथा अपने परिवार के जीवन का निर्माण कार्य सौंपते हैं उसकी परीक्षा योग्य क्यों नहीं है?

यह भी है कि परीक्षा तो आप करते हैं पर उसके मापदण्ड आपने बदल दिए हैं। आज के युग में निम्न मापदण्ड ही देखे जाते हैं। १.किस गुरु के यहाँ कितनी भीड़ होती है। २.कौन गुरु कितनी अधिक गारन्टी के साथ आपको कष्टों से मुक्त कर देने करा दावा करता है। ३. किस गुरु के शिष्यों में वी.आई.पी. तथा वी.वी.आई.पी कितने हैं। ४.कम से कम पुरुषार्थ व निवेश से अधिकतम लाभ कौन दिला सकता है?

विद्या, तप, वैराग्य, जितेन्द्रियता, सादगी जैसी कसौटियाँ तो जैसे बीते युग की बात हो गईं। जिन लोगों ने धर्मगुरु होने को एक प्रोफेशनल के रूप में स्थापित किया है वह ठीक एक दूसरे व्यापारी की भाँति मार्केटिंग में विश्वास रखते हैं। जिसकी जितनी अच्छी मार्केटिंग उतना ही ज्यादा सफल गुरु। ऐसे परिवेश में मुझे कहने दीजिए कि आसाराम/नारायण साईं/नित्यानन्द/इच्छाधारी बाबा/कृष्णावतार बाबा के मेकर आप और हम हैं। एक व्यक्ति कुछ चमत्कारों/हाथ की सफाई को दिखाकर भीड़ को आकर्षित करता है। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती है तो जन-बल को अपने प्राणस्वरूप समझने वाले वी.आई.पी. नेता भीड़ में शामिल हो जाते हैं। बाबा पर सत्तामद चढ़ने लगता है। पान खाकर जो पीकदान में पीक थूँकता है और उसे प्रसाद रूप में वितरित करता है, जैसे ही ग्रहणकर्त्ताओं की पंक्ति में खड़े होते हैं आप मेकिंग ऑफ कृष्णवतार का हिस्सा बन जाते हैं। जबर्दस्त मार्केटिंग, जबर्दस्त प्रचार-बाबा की महिमा अपरम्पार। आज ये बाबा एक उच्चाधिकारी की दो बेटियों के साथ दुष्कर्म करने के फलस्वरूप जेल में है। मुम्बई स्थित एक परिवार में नववधू के सन्तान उत्पन्न नहीं हो रही थी, कुलगुरु ने बताया कि 'एक बुरी प्रेतात्मा ने वधू के शरीर पर कब्जा कर रखा है। रात्रि में एक बजे वधू के साथ बन्द कमरे में अनुष्ठान करना होगा। आत्मा शरीर छोड़ते व [illegible] लोग अधीर न होना।' इस अनुष्ठान में क्या हुआ होगा पाठक भलीभाँति समझ सकते हैं। पर हम बलपूर्वक कहना चाहते हैं कि जैसे ही आप ऐसी अविद्याजन्य बातों पर विश्वास करना प्रारम्भ करते हैं आप ढोंगियों को फैलने का अवकाश प्रदान कर मेकर ऑफ आसाराम/.....बन जाते हैं। एक व्यक्ति के स्वप्न पर पूरी की पूरी सरकार सोना प्राप्ति की अभिलाषा लेकर खुदायी में जुट जाती है तो ऐसे देश में तो सभी 'मेकर्स ऑफ आसाराम' बन जाते हैं। मूर्खता की भी कोई सीमा होता है।

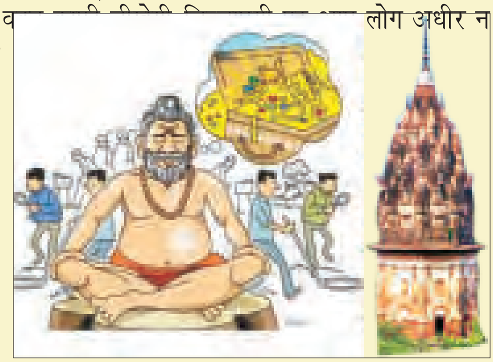

इसी प्रकार आप चंगाई के व्यापार में मालामाल होते जा रहे दिनाकरन के साम्राज्य में शामिल होते हैं अथवा पीर-फकीरों से हर दुःख के निवारण हेतु यन्त्र-मंत्र ताबीज लेने वालों की भीड़ में सम्मिलित होते हैं, अथवा इस प्रकार की अविद्याजन्य बातें फैलाने में सहायक बनते हैं तो ऐसे वर्गों को प्रोत्साहन दे रहे होते हैं। आसाराम जी की बात करें तो वे सबसे विशिष्ट हैं। अभी तक धर्माचार्यों में वंशवाद नहीं चला था इन्होंने वह कमी भी पूरी कर दी। नारायणसाईं भी भगवान बन गए। पुत्र भी क्या शानदार? बाप एक कदम तो बेटा दस कदम। 'बाप बेटा एंड कम्पनी' की सम्पत्ति अकूत है। ४५० आश्रम हैं। पुलिस द्वारा बाप को गुजरात से जोधपुर सड़क मार्ग से ले जाया गया तो जोड़-जोड़ दर्द करने लगे। चार्टर प्लेन की माँग करते रहे। क्या रईसी है। बेटा १३ करोड़ रुपये तो सिर्फ रिश्वत में दे रहा है। यह अकूत सम्पत्ति 'मेकर्स ऑफ आसाराम' की ही तो है। इन्हें कभी विचार नहीं आया कि जब चक्रवर्ती सम्राट बनने वाला चाणक्य एक पर्णकुटी में रहता था तो आलीशान तथाकथित साधना कुटियाओं में निवास करने वाले ये भगवान तपोनिष्ठ कैसे हो सकते हैं? इनके आश्रम में तहखाने क्यों बने हैं? सुरंगें क्यों निकल रही हैं। जब ये साधिकाओं को ओशो आश्रम में उन्मुक्त क्रीड़ाओं की शिक्षा लेने भेजते थे तब उन साधिकाओं को पृथक् क्यों नहीं हो जाना चाहिए था? अपना सब कुछ बेचकर आश्रम में धन लगाने वाले भक्तों को इनकी गुरु-गीता के इस निर्देश पर ऐतराज क्यों नहीं था कि 'भक्तों को अपनी पत्नी भी गुरु को समर्पित कर देनी चाहिए।' कभी आपने विचार किया नाना प्रकार के राजसी वस्त्राभूषण व पगड़ियाँ पहनने वालों का वैराग्य से क्या संबंध हो सकता है? नाच-नाचकर प्रवचन देने की कला न्यारी आविष्कृत की गई है। अब पता चला कि यह एक विशिष्ट प्रकार की 'मोडस आपरेन्डी' थी जो महिला साधिकाओं को चिह्नित करने हेतु बाप-बेटे अपनाते थे। परन्तु टार्च की रोशनी डाल शिकारों को चयन करने की पद्धति के बारे में झूमते भक्त कुछ न जान सके। आखिर एक साधारण-सा व्यक्ति आसाराम हरपलानी आसाराम बापू कैसे बना? उत्तर है अविद्या में आकंठ डूबे जन-समूह के

कारण। आसाराम जी का हैलीकाप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। तब एक बड़े राजनीतिक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जब इसे आसाराम जी की दैवीय शक्तियों का चमत्कार बताया तब क्या वे 'मेकर ऑफ आसाराम' नहीं बन रहे थे?

पाठकगण! मुझे कहने दीजिए कि जैसे ही आप स्वीकार करते हैं कि यम-नियमों की कठिन साधना की बात न कर ये जितने भी सन्त/गुरु/बाबे जब एक गुरुमंत्र/बीजमंत्र के सहारे अभ्युदय तथा निःश्रेयस की प्राप्ति कराने की बात करते हैं तथा आप स्वीकार करते हैं तो आप मेकर्स की भीड़ में शामिल हो जाते हैं। तब आपको कई गुणा होती इनकी सम्पत्ति तथा उसका रहस्य भी नहीं दिखता। बिना वैराग्य साधना के ये जितेन्द्रिय कैसे हो सकते हैं यह भी आपके ध्यान में नहीं आता। दरअसल आप की मानसिकता ऐसी बना दी जाती है कि गुरु पर कोई शंका भी आपको पाप लगने लगती है। बीजमंत्रों/मन्त्राशों द्वारा बड़ी-बड़ी सभाओं में भक्तों की समस्त इच्छाएँ किस प्रकार पूर्ण हो गईं, इसका प्रदर्शन मार्केटिंग चातुर्य है। इसी मार्केटिंग के कारण नई-नई दुकानें चालू हो जाती हैं। पुरानी बंद दुकानें पुनः उद्घाटित हो जाती हैं। निर्मल बाबा की बन्द दुकान फिर चालू हो गई। इन्होंने डायबिटीज के मरीज एक प्रोफेसर को मनोकामना पूर्ति हेतु खीर खिलाकर बीमार कर दिया। ध्यान रक्खें भक्त एक पढ़े-लिखे प्रोफेसर थे। अविद्याा का साम्राज्य देखिए कि लाल टोपी, आँखों में काजल तथा तंत्र-टोने का सहारा लेकर ये बाप-बेटे दुष्कर्मों की सजा से बचने का जुगाड़ कर रहे हैं। वस्तुतः आज की शिक्षा, आज का वातावरण आपको अविद्या से नहीं बचाता। जब तक आप इनके हथकण्डों पर विश्वास करते रहेंगे आसाराम/नारायण/इच्छाधारी/... ...की मेकिंग होती रहेगी चाहे इनके एक के बाद एक घोटाले सामने आते रहेंगे इस सत्यानाशी गुरुडमवाद से आप नहीं निकल पायेंगे। राष्ट्र का बौद्धिक अधःपतन होता रहेगा। अतएव ऐसे बाबाओं की 'मेकिंग' से बचिए।

**अशोक आर्य**
**०९००१३३९८३६, ०९३१४२३५१०१**

# मैं कुछ बातें पूछ रहा हूँ ?

मैं कुछ बातें पूछ रहा हूँ दिल्ली के सिंहासन से।
कैसे उसकी साख गिर रही ढीले-ढाले शासन से।।
क्यों है भ्रष्टाचार देश में क्यों इतनी महंगाई है
क्यों शासन ने आंखें मींचकर यह दुर्दशा बनाई है,
क्यों सत्ता के ऊपर बैठे इतने बुद्धिहीन हुए,
जनता का हित करने में वे कैसे इतने दीन हुए,
क्यों बचते हैं राजनीति में सदाचार के पालन से।
मैं कुछ....।।

शासन नहीं चला सकते तो थक कर बैठे अपने,
व्यर्थ यदि वे नहीं कर सकते जनता के पूरे सपने,
ऐसे निष्क्रिय नेता को गद्दी का अधिकार नहीं,
जो कर सकता किसी रूप में जनता का उपकार नहीं,
कैसे होगा देश का वर्धन दुर्योधन, दुःशासन से।
मैं कुछ....।।

जनता की आशाओं को वह क्यों नहीं पूरा कर पाया,
बढ़ता भ्रष्टाचार देश में क्यों नहीं उसने रुकवाया,
घपलों से घोटालों से क्यों उसके नेता झूम रहे,
खादी के कपड़ों में बनकर चोर लुटेरे घूम रहे,
मनमानी करते हैं सब बचते हैं अनुशासन से।
मैं कुछ....।।

भोली-भाली जनता का उत्पीड़न नित बढ़ता जाता
हिंसा, हत्या, लूटपाट का ध्वज चतुर्दिक फहराता
डूब रही है नाव देश की अपराधों के सागर में
घोल रहे विष मिलकर दुर्जन अमृत वाली गागर में
सुख के पौधे काट रहे हैं हरियाली के आंगन से।
मैं कुछ....।।

रक्षक ही भक्षक बन बैठे माली बाग उजाड़ रहे,
भ्रष्टाचारी दुष्ट चतुर्दिक बनकर शेर दहाड़ रहे,
नहीं किसी को ध्यान देश का बस अपना घर भरना है,
कोई कुछ भी कहे परन्तु नहीं पाप से डरना है,
क्या फागुन बच पाएगा इस जल प्लावन के सावन से।
मैं कुछ....।।

महंगाई का हाथी सबको कुचल रहा है पैरों से,
अपने होकर लूट रहे घर चढ़कर बढ़कर गैरों से,
देशभक्ति के झूठे नाटक कलाकार बन खेल रहे,
गाड़ी को प्रगति की मिलकर पीछे सभी धकेल रहे,
कैसे पार लगेगी नौका सागर के इस गर्जन से।
मैं कुछ....।।

सुख का शासन दो जनता को या सत्ता से दूर हटो,
रामराज का वचन निभाओ हठधर्मी पर नहीं डटो,
दूर अंधेरा करो देश में भ्रष्टाचार-कुशासन का,
आतंकी घटनाओं से और अनाचार के पालन का,
उठ जाओ अब नींद छोड़कर निष्क्रियता के बंधन से।
मैं कुछ....।।

भीतर आतंकी घटनाएँ सीमा पर तोपों का गर्जन,
घात लगाए बैठे हैं आक्रमण करने को दुश्मन,
धीरे-धीरे देशभूमि पर वे कब्जा करते जाते,
हम सोए हैं इसीलिए वे निडर हो बढ़ते आते,
कैसे देश बचेगा ऐसे कायरता के पालन से।
मैं कुछ....।।

डॉ.मित्रेश कुमार गुप्त, मोबाइल ०९९९७६४६३६० (कलम पुत्र मई २०१३)

गणतंत्र दिवस पर विशेष

# क्या भारत का शासन वास्तव में प्रजातांत्रिक है?

कृष्ण चन्द्र गर्ग

**चुनाव में जनता की भागीदारी –** केन्द्र सरकार में आम जनता केवल लोकसभा के लिए मत डालती है, राज्यसभा, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति को नहीं चुनती। राजनैतिक दलों के नेता जिसे चाहे राज्यसभा का सदस्य बना देते हैं, मंत्री के पद पर फेल होने वाले व्यक्ति को प्रान्त का राज्यपाल बना देते हैं। लोकसभा के चुनाव में भी राजनेताओं द्वारा ही उम्मीदवार जनता पर थोपे जाते हैं, जनता उन्हें अपना उम्मीदवार नहीं बनाती है। इसमें आधार भाई-भतीजावाद, धन-बल या बाहुबल होता है। इनमें बहुत सारे तो ऐसे होते हैं जिन पर गंभीर अपराधों में मुकदमे विभिन्न अदालतों में चल रहे होते हैं। वर्तमान लोकसभा में लगभग एक तिहाई सदस्य गंभीर आरोपों में घिरे हैं। चुनाव जीतने के बाद सभी सांसद अपने-अपने दल के नेता के वफादार बने रहते हैं, जनता के नहीं। वे झूठ-मूठ में ही जनता के प्रतिनिधि कहे जाते हैं।

**कानून बनाने की प्रक्रिया–** कोई भी कानून बनाते समय सांसद या विधायक अपने दल के नेता के आदेश के अनुसार ही मतदान करते हैं। वे अपने स्वतंत्र विचार तथा अपने मतदाताओं की भावना के अनुरूप विचार नहीं रख

सकते। अगर ये अपने दल के नेता के विचार के विपरीत मत रखते हैं तो उन्हें दल से बाहर कर दिया जाता है। दल के बाहर होकर इन सांसदों और विधायकों का महत्व लगभग समाप्त हो जाता है क्योंकि ये अपने बल पर सांसद या विधायक नहीं बने होते हैं इसलिए अपने दल के नेता के विरुद्ध चलने की हिम्मत ये नहीं करते। इस कारण कानून जनता के हित में कम और राजनेताओं के पक्ष में अधिक बनते हैं। जनता की भावना के विपरीत ये सांसद और विधायक अपने वेतन भत्ते और अन्य सुविधाएँ जब चाहते हैं और जितना चाहते हैं फटाफट बढ़ा लेते हैं।

केन्द्र सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों के मंत्री बनाने का ढंग भी जनता या देश के हित में नहीं है। विभाग के हिसाब से मंत्री की योग्यता का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। संख्या में मंत्री अनावश्यक रूप से बहुत अधिक लिये जाते हैं। सांसदों, विधायकों, मंत्रियों, राष्ट्रपति, राज्यपालों आदि को दिए जाने वाले आर्थिक लाभ तथा अन्य सुविधाएँ इतनी अधिक हैं जिनको देखने से लगता है कि देश के सारे साधन तथा संसाधन शायद इन्हीं लोगों के लिए बने हैं।

लोकसभा तथा विधानसभाओं की अवधि पाँच साल बहुत अधिक लम्बी है। एक बार वोट लेकर इन लोगों को जनता से परे होकर अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए बड़ा लम्बा समय मिल जाता है और जनता मजबूर बनी देखती रहती है। राष्ट्रपति तथा राज्यपालों के पद देश पर अनावश्यक भार हैं। बारम्बार और जगह जगह उपचुनाव देश के लिए घातक हैं (वास्तविक शान्तियाँ न होने के कारण)। उपचुनावों के कारण देश में लगभग हर समय चुनाव का वातावरण बना रहता है। ऐसी स्थिति हो गई है कि जैसे चुनाव ही महत्वपूर्ण हैं, काम नहीं। देश के नेताओं का ज्यादातर ध्यान चुनावों पर ही रहता है। इस सबके बावजूद सरकारें स्थायी नहीं रहतीं, गिर जाने का खतरा बना रहता है। इसलिए सरकारें बचाने पर ध्यान ज्यादा रहता है, देशहित पर बहुत कम। और भी, अलग-अलग राजनैतिक दल गठजोड़ करके सरकारें बनाते हैं जो पूरी तरह इन दलों के स्वार्थों पर आधारित होती हैं, देशहित में बिल्कुल भी नहीं।

ऐसी व्यवस्था को लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता। लोकतंत्र का तो केवल ऊपरी खोल है, अन्दर तो केवल नेतातंत्र और लूटतंत्र है। इन कारणों से देश में समस्याओं का अम्बार लगा है। आजादी के बाद से देश में बहुत सी समस्याएँ पैदा हुई हैं और बढ़ी हैं। उदाहरण के तौर पर भ्रष्टाचार, आतंकवाद, देश पर कर्ज,

जनसंख्या-वृद्धि, खानपान की वस्तुओं में मिलावट, नकली नोट, अनाज की बरबादी, अपराधी लुटेरे शासक, सरकार में उत्तरदायित्व का अभाव, सरकारी तंत्र में कार्य अकुशलता, कश्मीर समस्या, चीन और पाकिस्तान का भारत के प्रति शत्रुता का व्यवहार, शराब का प्रचार और प्रसार, गंगा-यमुना में प्रदूषण, लम्बी महंगी भ्रष्ट न्याय व्यवस्था आदि।

प्रजातंत्र की परिभाषा करते हुए अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा कहे हुए ये शब्द उद्धृत किए जाते हैं- 'लोगों की, लोगों द्वारा बनाई गई, लोगों के हित में काम करने वाली सरकार (Government of people, by the people, for the people)। भारत की सरकार न तो लोगों द्वारा बनाई जाती है ओर न ही लोगों के हित में काम करती है। तो प्रजातंत्र कैसा?

अमेरिका के चौथे राष्ट्रपति (१८०६-१८१७) जेम्ज मैडिसन ने फैडरलिस्ट पेपरज़ में लिखा था-The accumulation of all powers- legislative, executive and judiciary in the same hands, wheather of one, few or many and whether hereditary, self appointed or elective ,may justily be pronounced the very definition of tyranny. अर्थात् विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका- अगर ये तीनों शक्तियाँ उन्हीं हाथों में इकट्ठी हो जायें, चाहे वह एक व्यक्ति हो, कुछ व्यक्ति हों या बहुत से व्यक्ति हों, और बेशक वे पुश्तैनी हों, स्वयं शासक बने हों या चुने गए हों, यही निरंकुश और क्रूर शासन की उचित परिभाषा होगी।

भारत में विधायिका और कार्यपालिका के अधिकार तो सीधे तौर पर एक ही संगठन-शासक दल के मंत्रिमंडल या उनके कोर ग्रुप के पास हैं। राष्ट्रपति तो केवल दिखावे मात्र के लिए हैं, वे तो रबर स्टैम्प हैं। बहुत बार न्यायपालिका पर भी इस संगठन का प्रभाव दिखाई देता है- कभी सीधे तौर पर भी और कभी जाँच एजेन्सियों के द्वारा। सभी जाँच एजेन्सियाँ इसी संगठन के अधीन काम करती हैं। बड़े लोगों के खिलाफ जाँच करने की इजाजत देना या न देना उन्हीं के हाथ में है और फिर जाँच धीमी हो या तेज गति से हो इसका दिशा-निर्देश भी ये अपने स्वार्थ के हिसाब से करते हैं। न्यायालय भी शासक दल के खिलाफ फैसला देने से हिचकिचाते हैं। इनके खिलाफ जो फैसले आते भी हैं वे आमतौर पर किसी छोटे अधिकारी के खिलाफ ही आते हैं, बड़े खिलाड़ी तो फिर बचा लिए जाते हैं। इस प्रकार भारत के शासन के प्रति प्रायः करके उपरोक्त परिभाषा ही उपयुक्त बैठती है।

इसके विपरीत अमरीकी व्यवस्था पूरी तरह प्रजातांत्रिक है। वहाँ पर विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका- तीनों शक्तियाँ पूरी तरह अलग-अलग तथा एक दूसरे से स्वतंत्र हैं। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, संसद के दोनें सदनों के सारे सदस्य, राज्यपाल-सभी सीधे तौर पर जनता के द्वारा चुने जाने के बाद वास्तव में जनता के प्रतिनिधि बने रहते हैं। चुनाव के बाद राजनैतिक दलों का शासन में कोई दखल नहीं रहता। प्रतिनिधि सभा(House of representatives) हमारी लोकसभा की तरह का सदन है। उसका कार्यकाल सिर्फ दो वर्ष का है। वहाँ उपचुनाव नहीं होते। सांसद, विधायक, राष्ट्रपति वगैरह अपने वेतन, भत्ते स्वयं नहीं बढ़ा सकते। केन्द्र से लेकर नगर तक सत्ता का पूरी तरह विकेन्द्रीकरण है। इन कारणों से वहाँ पर कानून देशहित में बनते हैं और देश तेजी से उन्नति की ओर अग्रसर है।

-८३१सेक्टर-१०
पंचकूला (हरियाणा)

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४०₹

प्राप्ति स्थल
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

आर्य पुत्र

A pride character of Arya Samaj

An exclusive story of Mumbai Police Commissionor

# Dr. Satya Pal Singh

Arya Pathik Girish C Khosla

डॉ. सत्यपालसिंह एक ऐसे उच्च पदाधिकारी हैं जो 'आर्य पुत्र' संज्ञा को सार्थक करते हैं। हम आर्यजन इन पर जितना गर्व करें, कम है। 2007 में हुए शिकागो सम्मेलन के सुअवसर पर डॉ. सुखदेव चन्द जी सोनी के सौजन्य से आपके दर्शन व आपके सारगर्भित उच्चकोटि के व्याख्यान श्रवण का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। विद्वता, कर्मठता, कर्त्तव्यनिष्ठा तथा विनम्रता के अद्‌भुत संयोग ने श्री सिंह के व्यक्तित्व को सँवारा है। आपकी सहधर्मिणी भी अत्यन्त सहज तथा विनम्र हैं। (स्व.) कैप्टन देवरत्न जी ने आपको एक-दो बार उदयपुर हेतु निमंत्रित किया था। व्यस्तता के कारण वे न आ सके। अब आशा करते हैं कि ऋषि की इस तपोस्थली पर वे अवश्य पधारेंगे। प्रस्तुत है आर्य पथिक श्री गिरीश खोसला द्वारा लिया गया डॉ. सत्यपाल सिंह जी का साक्षात्कार, जो आपके जीवन दर्शन को साक्षात् करता है।

-अशोक आर्य

Dr. Satyapal Singh is better known for his ruthless crackdown on organized crime during his earlier tenures in Mumbai and tackling the naxal menace in Gadhchiroli district of eastern Maharashtra, which has earned him the **President's police medal.**

The son of humble farmer from Merrut district in Uttar Pradesh, it was sheer hard work and his exceptional academic record that took him out of the village to the city. After completing his M.Sc. in chemistry from Merrut University, he went on to do an M.phil. from Delhi University. He was even offered fellowships by two American Universities but when his parents refused to let him go abroad, he decided to pursue a Ph.D. in chemistry and later even did an MBA from Australia.

"I wanted to become a scientist, but it was my father's dream that I join the civil services, so I took the examination" says the 1980 batch Maharashtra Cadre IPS officer.

Does he ever regret his decision ?

"I've spent 33 years as a police officer and not once did I have reason to feel that I was in the wrong profession. I firmly believe it was God's will." Says Satyapal Singh with a broad smile.

On Mumbai rape case last month, it was headline news. Media suspected he may at least had have reason to regret a couple remarks that invited criticism. In an open letter to CP, published prominently in a local tabloid recently.

"The media presented a distorted version of my statement. I don't have the time to respond to personal attacks. All I can say is that the common people of Mumbai know and understand me better than journalists. I'm a police officer and I have other pressing problems to worry about" says Singh.

Known for his no-nonsense approach and his humility, the commissioner who has been a life-long student of the Vedas and even authored two books including one on the Naxal menace, says his bigger worry is about crimes that are symptomatic of a serious social problem, something very few people are paying proper attention to.

**" In the last few years there has been a sharp rise in the number of sexual and violent crimes being committed by teenagers and young adults. Those who defend public displays of sexuality that borders on the obscene consider themselves progressive, while those who object to it are called all sorts of names. Today young children has easy access to pornography on the net. Impressionable minds are being fed with all kinds of contents which may not be right for them. There is no filter to protect them from this before they reach an age when they can process all this maturely." Says Singh.**

The problem, Singh points out, is also the subject of a PIL filed in the Supreme court by a

Mumbai NGO, helmed by social activist Prof. Pratibha Naithani of St. Xavier's. Incidently Shobhaa is a graduate from the same institution. Singh also cites the stark economic disparity in the city, slums nestling around luxury towers, the growing drug addiction among the youth.

"These issues are being addressed, but much more is needed."

Singh has no hesitation in admitting that the gang rape of the 22-year old photojournalist in the abandoned Shakti Mill, coming as it does in the wake of the Delhi Rape that triggered national outrage, was a challenging phase of his present tenure.

"When I first heard about it, I have immediately rushed to the N.M.Joshi police station. Then I visited the victim in the Hospital. It was a long night as we formed teams and chalked out our strategy. We managed to crack the case in record time. But the fact that such an incident took place in Mumbai is a shame. Let me make thing very clear- I will show no mercy to sexual predators . They have become the cancer of our society," says Singh who is himself the father of two grown up daughters.

Is he disappointed that there was hardly any acknowledgment for the quick round up of the rapists from the quarters that criticized his comments? " I have come to accept that if people are not criticizing your work, this is equivalent to appreciation. I have learnt to be satisfied with that. From the quarters that matter to the force, there was praise."

What seems to have attached the most ire are his comments about women, which seem to suggest that he believes in separate rule for them and men. How he can justify that especially in a cosmopolitan society like Mumbai where women have always enjoyed equal status.

"So much has been read into my statements about women. We need to strike a balance between liberty, Dignity and security of women. I have always put women on a higher pedestal than men. They are the cradles of culture and the mothers of future India. At the same time, even the Indian constitution, which provides us fundamental rights, prescribes our fundamental duties. It doesn't matter that some people will try to put words in my mouth or misinterpret a comment to give it a sensational twist. **I continue to stand by the values and conviction that have brought me this far in life,"** he avers.

MORE THAN JUST A TOP COP

Those who have worked with Satyapal Singh will tell you that his soft manner hides an iron will. When he was additional CP north west during the early 90s, he broke back Chota Rajan, Arun Gavli and Chota Shakeel gangs. While Singh believes an ideal police officer is one who can enforce his will without resorting to physical intimidation, he has never held back his punches when required.

"There are times when force has to be used. When Mumbai was a different place, when the mafia had spread it's wings , there have been periods when vatons and bullets were liberally used. In the Mahabharat, there is an incident when Guru Dronacharya loses his temper and tells an arogent prince Duryodhan, 'If I have the four Vedas in front of me, I also have a vow and quiver behind me.' It's a statement I have made my guiding principle.'He says matter of factly.

Having said that, the highly decorated police officer told Mumbaiwalla that his secret wishes really to make a mark in the world of literature. "Eventually I will trade my uniform to become a man of letters again," he says. "I have written two books already but I have so much more to do."

After I retire I intend to write many more books. They will be about communal harmony and the roots we have ignored. The second will be about how to bring about lasting religious harmony in society. These are subjects I have given a lot of thought to."

Besides his love for writing, Singh's other passion is fitness. "But my idea of fitness goes beyond the physical aspect of it. Also, simply being free of disease is not my benchmark of good health. **If without external aids and medication you have a normal appetite, manage a full night's sleep and a full days work with a peaceful mind, that is true fitness,"** He maintains. But in the more commonly understood sense of the world,who does He think is the fittest officer in his team? " I would have to say Himanshu Roy has the best physique among the senior officer.He really excercises a lot," signes of sign unable to restrain a quick smile.

**We are proud of the achievements of Dr. Satyapal Ji, and are fortunate to have such a brave and intelligent officer an Aryasamaj leader.**

**( Courtesy- Navrang Times)**

# ईश्वर तत्व विज्ञान शिविर - मेरा अनुभव

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास के तत्वावधान में वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल (राज.) में आयोजित त्रिदिवसीय ईश्वर तत्व विज्ञान शिविर में जाने का मुझे सौभाग्य मिला। मेरी यह यात्रा बेहद सार्थक एवं मार्मिक रही। मैंने पहले यह सोचा था कि शिविर के रूप में आयोजित संगोष्ठी परम्परागत ही होगी परन्तु वहाँ जाने पर यह अनुभव हुआ कि वह संगोष्ठी पूर्ण वैज्ञानिक थी। इसमें आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने वर्तमान भौतिक विज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों पर गम्भीर प्रश्न किये थे, जिसको सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। इन गम्भीर प्रश्नों पर वैज्ञानिकों में संवाद होना चाहिए। सम्भव है कुछ वैज्ञानिकों ने इन प्रश्नों पर विचार करके उत्तर भी दिये हों परन्तु उनकी हमें जानकारी न हो। इस गोष्ठी में सुविधायें सन्तोषजनक थीं और प्रयास वास्तव में सार्थक था। दुःख इस बात का अवश्य था कि इसमें अपेक्षा से कम लोगों ने भाग लिया। यद्यपि मेरी ऐतरेय ब्राह्मण में रुचि विशेष नहीं थी परन्तु जब मैंने नैष्ठिक जी के ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक व्याख्यान के दो पृष्ठों को पढ़ा और उन्हीं के सायण भाष्य व डॉ. सुधाकर मालवीय के हिन्दी अनुवाद को देखा, तो लगा कि सायण आदि के भाष्य विश्व संस्कृति पर एक काला धब्बा हैं। यदि यही ऐतरेय का भाव होता तो हम निश्चित ही ऐतरेय ब्राह्मण को नकार देते। अब नैष्ठिक जी के वैज्ञानिक व्याख्यान को देखकर समझ में यह आया कि ब्राह्मण ग्रन्थ ब्रह्म-विज्ञान अर्थात् कॉस्मोलोजी के ग्रन्थ हैं। शाकाहार और अहिंसा का प्रचारक होने के नाते मांसाहार विरोध करने हेतु भी नैष्ठिक जी के भाष्य की महत्ता मेरी समझ में अच्छी तरह आयी है। हम इसके आधार पर हिंसा और मांसाहार के विरुद्ध युद्ध को और तीव्रता से आगे बढ़ा सकेंगे तथा हम दृढ़ता से कह सकेंगे कि ब्राह्मण ग्रन्थों के हिंसापरक अर्थ किसी भी दशा में नहीं हो सकते। अब मेरी भी रुचि ऐतरेय ब्राह्मण को पढ़ने की हो रही है। मेरा मत है कि नैष्ठिक जी के कथन सत्य हैं, यदि उन्हें प्रमाणित कर दिया जाये तो और अच्छा रहेगा। मैं उनके न्यासियों और सहयोगियों को इस शिविर के आयोजन के लिए धन्यवाद देने के साथ यह कहना चाहूँगा कि मैंने उस शिविर में नैष्ठिक जी के रूप में एक जीवित दयानन्द को देखा है, जो अपनों से बड़ों का आदर करता हुआ भी अपनी बात को दृढ़ता से कहने का साहस रखता है और बहादुरी से अपनी लड़ाई लड़ रहा है। मैं उनसे यह भी कहना चाहूँगा कि उन्होंने इस वेद विज्ञान अनुसंधान के महान् कार्य के लिए एक सही व्यक्ति को चुना है। मैं चाहूँगा कि उन्हें सभी सर्वात्मना सहयोग करें। मुझे आशा है कि यह संस्था निरन्तर पल्लवित होती रहेगी।

**आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा आयोजित शिविर पर एक विद्वान् सम्भागी की प्रतिक्रिया**

**Prof .Dr .Madan Mohan Bajaj**
Chancellor : Intrrnational Kamdhenu Ahimsa University, New Delhi.
Ex Professor of Physics &Chief of the Medical Physics ,
Department of Physics and Astrophysics of the University of Delhi ,
American Physical Society ,American Chemical Society ,
IEEE (USA ) Physical Society of Japan ,

# भारत के पुरातन वैज्ञानिक
# आयुर्वेदाचार्य महर्षि चरक

डॉ.भवानी लाल भारतीय

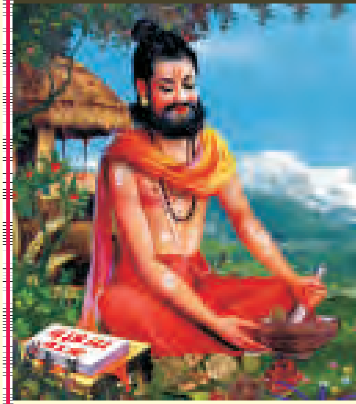

मानव शरीर को स्वस्थ, निरोग तथा दीर्घायु वाला बनाने के लिए आयुर्वेद या आयुर्विज्ञान की जानकारी आवश्यक है। आयुर्वेद की गणना वेदों के उपवेद के रूप में की गई है और चरक, सुश्रुत, अग्निवेश आदि ऋषियों ने अपने ज्ञान, अनुभव तथा प्रयोगों के द्वारा आयुर्वेद का विकास और विस्तार किया। प्रसिद्ध ग्रन्थ चरक संहिता के प्रणेता महर्षि चरक का काल २०० ई. माना जाता है। यह कुषाणवंश के सम्राट कनिष्क के राजवैद्य थे। चरक संहिता का मूल पाठ ऋषि अग्निवेश ने निर्धारित किया था। चरक ने इसमें नये प्रकरण जोड़े, इससे इसकी उपयोगिता बढ़ी। चरक संहिता संस्कृत में लिखी गई है। हिन्दी में इसका अनुवाद उपलब्ध है। आयुर्वेद की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में इसे स्थान मिला है।

चरक संहिता आठ भागों में विभाजित है- सूत्र स्थान, निदान स्थान, विमान स्थान, शरीर स्थान, इन्द्रिय स्थान, चिकित्सा स्थान, कल्प स्थान तथा सिद्धि स्थान। इनमें शरीर के विभिन्न अंगों की स्थिति तथा चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाली वनस्पतियों के गुण, प्रकृति आदि का विस्तृत परिचय दिया गया है। आयुर्वेद प्रणाली के चिकित्सक न केवल अपने विषय एवं चिकित्सा पद्धति के मर्मज्ञ होते थे, वे दार्शनिक दृष्टि से रोगी में आत्मविश्वास तथा आशा भाव जगाने की योग्यता रखते थे। उनके इस ग्रन्थ में चिकित्सा व्यवसाय में लगते समय चिकित्सक की प्रतिज्ञा का भी उल्लेख है। चरक संहिता विदेशी भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। आयुर्वेद के इतिहास में महर्षि चरक को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

३/५-शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

**सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-**

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश ( १८८४ ) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश ( १८८४ ) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप ''५.६X९.०'' पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में
₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

# दृष्टिकोण

# भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार : कारण व निवारण

## भ्रष्टाचार निवारण के लिए सुझाव ( गतांक से आगे..... )

१.स्वतंत्र स्वायत्तशासी संस्थान की आवश्यकताः- हर राज्य में किसी न किसी प्रकार के विभाग या संस्थान भ्रष्टाचार के उन्मूलन के क्षेत्र में काम करते हैं, लेकिन भ्रष्टाचार लगातार बढ़ता ही गया है और कम होने या निर्मूल होने की स्थिति कभी पैदा ही नहीं हुई है। हर राज्य में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो या सतर्कता आयोग या पीड़ा निवारण प्रकोष्ठ काम करता है। केन्द्र में केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो व केन्द्रीय सतर्कता आयोग इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्यरत हैं। इन सभी विभागों या संस्थाओं के बावजूद कोई विशेष प्रगति नजर नहीं आती। यहाँ तक कि कुछ राज्यों में लोकायुक्त संस्थान

व लोकपाल संस्थान भी काम कर रहे हैं। परन्तु स्थिति में सुधार कम ही हो पा रहा है। ऐसी परिस्थिति में यह देखना आवश्यक होगा कि इन विभागों व संस्थानों की कार्य प्रणाली व कार्यपद्धति में क्या कोई कमी है या उन पर किसी प्रकार का दबाव है? वे स्वतंत्र हैं या नहीं हैं? वे सशक्त और सक्षम हैं अथवा नहीं? जितने सरकारी विभाग या संस्थान हैं, वे संभवतः सरकार के अधीन होने के कारण स्वतंत्र संस्थान नहीं हैं, वे अपने विषय में यह अनुभव करते हैं कि उनके पास कोई शक्ति नहीं है और उनके द्वारा की गई सिफारिश की पालना भी सरकार पर निर्भर करती है।

सभी सरकारें घोषणा करती हैं कि वे सुशासन देंगी, विकास करेंगी, किन्तु जब तक भ्रष्टाचार व्याप्त है, देश में विकास की कल्पना करना उचित नहीं होगा। जब तक भ्रष्टाचार नहीं मिटेगा, सुशासन भी नहीं आयेगा। राजनीतिक नेतृत्व में भ्रष्टाचार मिटाने के लिए प्रबल इच्छाशक्ति की आवश्यकता जब तक न हो, तब तक भ्रष्टाचार का मिटना नामुमकिन है। समस्या की गंभीरता को देखते हुए ऐसे प्रभावी कदम उठाए जाने की आवश्यकता है, जिससे भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना हो सके। इस हेतु राज्य व केन्द्र दोनों स्तरों पर एक स्वतंत्र स्वायत्तशासी संस्था की आवश्यकता है जो राजनीतिक नकेल से दूर हो और प्रभावी तरीके से भ्रष्टाचारियों पर लगाम कस सके।

२.लोकसेवकों की भूमिका- लोकसेवक की, जिनका कि जनसम्पर्क रहता है, पूरी जवाबदेही होनी चाहिए। ऐसे लोक सेवक जनता की पहुँच के बाहर नहीं होने चाहिए। उनके काम की पारदर्शिता होनी चाहिए। किसी भी कार्य के पूर्ण होने की समयावधि निश्चित होनी चाहिए। इन सभी बातों की सतत् निगरानी होनी चाहिए।

सुशासन का एक महत्वपूर्ण मापदण्ड पारदर्शिता है। विधि के द्वारा सूचना का अधिकार दिया जाना एक बात है, किन्तु जिन विभागों में जनसम्पर्क रहता है, उन विभागों व कार्यालयों के अधिकारियों का यह दायित्व होना चाहिए कि उनके यहाँ लम्बित प्रार्थना पत्रों एवं मामलों के विषय में जनता को जानकारी उपलब्ध हो, वे किसी भी रूप में इस बात को प्रकाशित करें। सूचना माँगने का अधिकार एक बात है और बिना माँगे सूचना उपलब्ध कराने का उत्तरदायित्व दूसरी बात है।

अधिकारियों का यह भी दायित्व है कि वे कार्यालयों में उन कर्मचारियों को चिह्नित करें, जिनका जनता के साथ व्यवहार ठीक नहीं हो, जो अपने कार्य में दिलचस्पी नहीं लेते हों, विलम्ब करते हों, कार्य को निर्धारित समयावधि में पूर्ण नहीं करते हों व अपने काम को पूरा करने के सिलसिले में जनता

से कोई अपेक्षा रखते हों। यदि ऐसे कर्मचारी चिह्नित किए जायेंगे तो वास्तव में उस विभाग या कार्यालय के काम के सम्पादन में आश्चर्यजनक प्रगति होगी।

अधिकारियों का यह भी कर्तव्य है कि वे जनसाधारण की पहुँच में हों, वे जनसाधारण से मिलने के लिए समय निर्धारित करें और उस समयावधि में वे कार्यालय में मिलने के लिए उपस्थित रहें, जिससे कि उनको अपने कार्यालय के विषय में तथा प्रत्येक कर्मचारी के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके और जिस व्यक्ति का जो काम नहीं हो रहा है उसकी जानकारी उनको मिल सके।

**३. जनता की सहभागिताः-** व्यवस्था में परिवर्तन के साथ-साथ भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए जनता की सहभागिता भी बहुत आवश्यक है। जब तक जनता द्वारा हर विभाग के छोटे-से-छोटे कार्यालय पर सर्तकता एवं निगरानी नहीं रखी जायेगी या अंकेक्षण नहीं किया जाएगा, तब तक कार्यालय से भ्रष्टाचार का उन्मूलन संभव नहीं हो पायेगा। अतः प्रदेश के हर शहर और गाँव में प्रत्येक विभागों और कार्यालयों के लिए जन सतर्कता समितियाँ स्थापित की जानी चाहिए, जो कि कार्यालय के कामकाज पर पूर्ण निगरानी रख सकें।

जनता को यह जानकारी भी दी जानी चाहिए कि किस विभाग में किस काम के लिए कितना समय लगेगा तथा उस कार्य को तय कार्यावधि में पूर्ण किया जाना चाहिए। जिस

काम का उत्तरदायित्व जिस कर्मचारी पर हो, उसकी जानकारी भी जनता को दी जानी चाहिए। जिससे जनता को यह ज्ञात हो सके कि कौनसा काम, किसके पास, कितने समय से लंबित है और किन कारणों से नहीं हो रहा है। ऐसी जानकारी यदि जनता को रहेगी तो यह संभव नहीं हो पायेगा कि कर्मचारी अपने काम के सिलसिले में कोई अपेक्षा रखे और यदि कोई इसके बावजूद अपेक्षा रखता है तो वह आसानी से उच्चाधिकारी के समक्ष जवाबदेह हो जायेगा। जब तक ये व्यवस्थाएँ कार्यालय में स्थापित नहीं होंगी, तब तक आम नागरिक को राहत नहीं मिलेगी।

**४.सशक्त लोकपाल की आवश्यकताः-** सशक्त जन लोकपाल की स्थापना की जानी चाहिए। सशक्त लोकपाल खुली हवा के झोंके की तरह होगा। ईमानदार लोकसेवकों को इससे डरने की आवश्यकता नहीं है। मजबूत लोकपाल सच्चे व खरे अधिकारियों व मंत्रियों को ताकत देगा और भ्रष्टों पर नकेल कसेगा।

**५.सीवीसी को प्रभावी करने की आवश्यकताः-** सीवीसी (केन्द्रीय सतर्कता आयोग) प्रभावी इसलिए नहीं हो पा रही है कि वह सिर्फ अनुशंसा कर सकती है कार्रवाई नहीं कर सकती। उसे कार्रवाई करने के भी अधिकार दिए जाने चाहिए ताकि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा सके। इसे सरकारी नियंत्रण से और अधिक स्वायत्तता की आवश्यकता है।

**६. सिटीजन चार्टर की आवश्यकताः-** कानून का बेहतर ढंग से क्रियान्वयन हो सके इसके लिए लोगों को अपने कानून सम्मत अधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए और सिटीजन चार्टर बनना चाहिए। सिटीजन चार्टर की शुरूआत सबसे पहले जॉन मेजर ने की थी। सिटीजन चार्टर का अर्थ यह है कि किसी भी नागरिक का प्रशासन के साथ जो काम हो वो निश्चित अवधि में हो ।

यह एक जाना माना तथ्य है कि भ्रष्टाचार सत्तासीन लोगों को ही नहीं,बल्कि आम नागरिकों तक को नैतिक रूप से पतित करने वाला एक खतरनाक तन्तु है। वस्तुतः यह सत्तासीन लोगों एवं सरकारी कर्मचारियों की कार्यकुशलता को बुरी तरह से क्षीण बना देता है। ऐसी स्थिति में भ्रष्टाचारी लोग सत्ता में बैठे हुए अधिकारियों की मुट्ठी गरम करते रहते हैं तथा कानून और न्याय को अनदेखा कर

अपने स्वार्थों की साधना में इस हद तक गिर जाते हैं कि समाज में नैतिक मूल्य शनैः-शनैः समाप्ति की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

भ्रष्टाचार से उत्पन्न अक्षमता और नैतिक पतन मिलकर सम्पूर्ण राष्ट्र की प्रगति को अवरुद्ध कर उसकी प्रतिष्ठा पर भी एक प्रश्नचिह्न लगा देते हैं। चाहे विकास की योजनाएँ कितनी ही सुविचारित क्यों न हों, उन योजनाओं को क्रियान्वित करने वाला भ्रष्ट एवं निकम्मा प्रशासन तंत्र योजनाओं की आधारभूत विचारणा एवं कार्यफल को भी निष्फल कर देता है। यह एक सिद्ध तथ्य है कि यदि उपकरण तथा साधन दोषपूर्ण होंगे तो साध्य स्वतः ही अपवित्र एवं नकारा बन जायेंगे।

समाज में सीमा से अधिक फैला हुआ भ्रष्टाचार सामाजिक व्यवस्था की रीढ़ को ही तोड़ देता है। इस प्रकार की भ्रष्टाचारी स्थितियाँ देश की संस्थाओं में नागरिकों के विश्वास को हिला देती हैं। व्यापक रूप से फैली भ्रष्ट प्रवृत्तियों के कारण हताशा और खुदगर्जी को बढ़ावा मिलता है जिसके कारण अनेक प्रकार की दुष्प्रवृत्तियों का जन्म समाज में होता है। सर्वग्राही मानवीय मूल्यों तथा ईमानदारी, निष्ठा और सार्वजनिक क्षेत्र में सदाचार का इस हद तक क्षरण हो जाता है कि उनका नाम तक कोई नहीं लेना चाहता। इस तरह भ्रष्टाचार समाज के पतन और नैतिक गिरावट को जन्म देने वाली एक ऐसी बुराई है, जिसका सभी स्तरों पर डटकर मुकाबला किया जाना चाहिए।

सामाजिक, राजनीतिक व प्रशासनिक क्षेत्रों में भ्रष्टाचार की नाजायज संतान को पालने-पोषने के लिए सभी बराबर के जिम्मेदार हैं इसलिए सभी क्षेत्रों से संबंधित लोगों को ईमानदारी से इसको हटाने के प्रयास करने चाहिए तभी भ्रष्टाचार कम हो सकता है।

– विनोद सुरोलिया

( साभार– प्रतियोगिता दर्पण )

# दीर्घायु एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए भी अनिवार्य है अभिवादनशीलता व शिष्टाचार

सीताराम गुप्ता

एक ही समय में अलग-अलग स्थानों पर अभिवादन के अनेक रूप प्रचलित होते हैं। हर राष्ट्र, हर क़ौम व हर मत व संप्रदाय की अभिवादन करने की पद्धति में भी विभिन्नता पाई जाती है। शिक्षित और अशिक्षित समाज में अभिवादन करने के ढंग में पर्याप्त अंतर मिलता है। प्रायः विकसित और सभ्य समाज में अभिवादन का तरीक़ा अधिक औपचारिक पाया जाता है। क्या विकसित और सभ्य समाज

अच्छे तरीक़े से अभिवादन करता है अथवा अच्छे तरीक़े से अभिवादन करने वाला समाज ही वास्तव में विकसित और सभ्य होता है? वस्तुतः अभिवादन करने के तौर-तरीक़े या तो हमें अपनी परंपरा से मिलते हैं या फिर वर्तमान परिवेश से। हम जैसे समाज में जीते हैं उसी के अनुरूप वैसी ही अभिवादनशीलता हमारे आचरण में स्वतः सम्मिलित हो जाती है। प्रश्न उठता है कि अभिवादन करने की क्या आवश्यकता है और इसका सही स्वरूप कौन-सा है?

भारतीय संस्कृति में अतिथि को भगवान का रूप माना गया है। तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है 'अतिथि देवो भव'। कथासरितसागरकार सोमदेव भट्ट के अनुसार **'यथाशक्त्यतिथैः पूज्ञा धर्मो हि गृहमेध्निाम्'** अर्थात् अपनी शक्ति के अनुसार अतिथि का सत्कार करना गृहस्थ का धर्म है। हमारे यहाँ हर उपयोगी तत्त्व को धर्म का रूप देकर उसे दैनिक जीवन में सम्मिलित कर लिया जाता है। क्या अतिथि सत्कार की इस परंपरा के पीछे भी कोई उपयोगी तत्त्व काम कर रहा है? अतिथि सत्कार का वर्तमान स्वरूप क्या हो सकता है तथा क्या वास्तव में हम इससे लाभान्वित भी होते हैं?

जब कोई मित्र या अतिथि हमारे घर आता है तो हम न केवल उस समय उसका यथोचित सत्कार करते हैं अपितु जब वह वापस जाता है तो जाते समय भी उसे सम्मान के साथ विदा करते हैं। विदा करते समय हम या तो हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं अथवा हाथ हिलाकर बाय-बाय कहते हैं। कुछ लोग किसी को विदा करते समय किसी भी प्रकार की औपचारिकता का निर्वाह नहीं करते जो उचित प्रतीत नहीं होता। मेहमान को भी चाहिए कि जाने से पहले उचित रीति से इजाज़त ले। यदि वह जाने की इजाज़त ही नहीं लेगा तो उसे विदाई कैसे दी जा सकती है अतः ज़रूरी है कि मेहमान जाने से पहले उचित रीति से इजाज़त ले और मेज़बान ठीक तरह से उसे विदा करे।

मेहमान को विदा करते समय जिन बातों का ध्यान रखना चाहिए हमें न केवल इनकी जानकारी होनी चाहिए अपितु व्यावहारिक रूप से भी इनका पालन करना चाहिए। जहाँ तक संभव हो मेहमान को बस स्टैंड, ऑटो या रिक्शा स्टैंड अथवा उसके निजी वाहन तक छोड़ने जाएँ। मुझे याद है गाँव में जब भी हमारे घर कोई मेहमान आता था तो उसे बस स्टैंड तक छोड़ने जाते थे और जब तक बस नहीं आती थी वहीं रहते थे। मेहमान का सामान भी ख़ुद उठाकर ले जाते थे। इस प्रक्रिया में एक किलोमीटर का सफर और घंटे-डेढ़ घंटे का समय लगना स्वाभाविक था।

आज लोगों के पास समय की बेहद कमी है। कई बार मेहमान को घर के दरवाज़े पर ही विदा करना पड़ता है। ये परिस्थितिजन्य विवशता भी हो सकती है लेकिन यदि हम किसी व्यक्ति को घर के दरवाज़े से ही विदा कर रहे हैं तो भी शिष्टाचारवश कुछ बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है। कुछ लोग आगंतुक के बाहर निकलते ही एकदम झटके से दरवाज़ा बंद कर लेते हैं जो उचित नहीं। आगंतुक के बाहर निकलते ही फौरन दरवाज़ा बंद न करें अपितु तब तक दरवाज़ा खुला रखें जब तक मेहमान आँखों से ओझल न हो जाए या कम से कम थोड़ी दूर न चला जाए। उसके बाद बिना आवाज़ किए धीरे से दरवाज़ा बंद कर लेना चाहिए।

जैसे किसी के बाहर निकलते ही एकदम भड़ाक से दरवाज़ा बंद करना अच्छा नहीं लगता उसी प्रकार यदि रात का समय है तो आगंतुक के बाहर निकलते ही मेन गेट या ज़ीने

की लाइट एकदम ऑफ करना भी गलत है। अपरिचित या अवांछित आगंतुक से भी नम्रता से पेश आना चाहिए। इसका ये अर्थ नहीं है कि हम अपनी सुरक्षा का ध्यान न रखें। अपनी सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें। अपरिचित के लिए मेन गेट या लोहे का जाली वाला दरवाज़ा एकदम से न खोलें। पूर्ण रूप से आश्वस्त होने पर ही दरवाज़ा खोलें अन्यथा धीरे से पुनः बंद कर लें।

प्रत्यक्ष रूप से मिलने पर ही नहीं फोन पर बातचीत करते समय भी अभिवादन की औपचारिकता का पालन करना चाहिए। बातचीत की समाप्ति के उपरांत फोन रखते समय भी उचित रीति से अभिवादन के पश्चात् ही फोन रखना चाहिए। घंटी बजने पर आराम से फोन उठाएँ तथा बातचीत की समाप्ति के उपरांत भी आराम से ही रखें। दूसरी ओर वाले व्यक्ति की बात समाप्त होने से पहले ही फोन को काटना या पटकना ठीक नहीं। घंटी बजने पर फोन उठाने से पहले निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दें:

१ हमेशा शांत भाव से फोन उठाएँ।

२ घंटी बजने पर परेशान होने की बजाए एक ख़ूब गहरी साँस लेकर छोड़ दें। इससे तनावमुक्त होने में मदद मिलेगी।

३ फोन उठाने से पहले मुस्कराने का प्रयास करें इससे भी तनावमुक्ति में मदद मिलेगी।

४ फोन उठाने पर उचित रीति से सामने वाले का अभिवादन करें तथा सामने वाले के अभिवादन का ठीक से उत्तर दें।

५. अगले व्यक्ति की बात धैर्य से सुनें और बार-बार बीच में न काटें।

६. धैर्य से पूरी बात सुनने के बाद ही उसका उत्तर दें या अपनी बात कहें।

७. किसी को फोन पर ज्यादा देर इंतज़ार कराना या बातचीत को बेवजह लंबा खींचना भी ठीक नहीं।

८ यदि समय की कमी है तो सामने वाले से क्षमायाचना करते हुए बाद में फोन करने के लिए कहें या कहें कि मैं बाद में फोन करता हूँ।

९ बात पूरी होने पर उचित रीति से ही उसका समापन भी करें। फोन रखने से पहले औपचारिक रूप से इजाज़त लें अथवा अभिवादन करें। अगले व्यक्ति की इजाज़त अथवा अभिवादन का भी उत्तर देने के उपरांत ही अत्यंत धीरे से फोन रखें या काटें।

शिष्टाचार एवं अनुशासित जीवन का हमारे स्वास्थ्य से भी गहरा संबंध है। इन नियमों का पालन करने से न केवल हमारे संबंध अधिक मधुर एवं अर्थपूर्ण होंगे अपितु हम तनाव से भी मुक्त रहेंगे जिसका हमारे स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। कहा गया है:

अभिवादनशीलस्य नित्यंवृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्॥

अर्थात् नित्य वृद्धों की सेवा करने वालों तथा उनका अभिवादन करने वालों की आयु, विद्या, यश और बल, ये चार चीज़ें सदैव बढ़ती हैं। और जिस व्यक्ति में इन चार चीज़ों की वृद्धि होगी उसके स्वस्थ रहने में कोई संदेह नहीं।

पुराणों में महर्षि मार्कण्डेय की एक कथा मिलती है कि कैसे अभिवादनशीलता के बल पर वे चिरंजीवी हो गये। महर्षि मार्कण्डेय मृकण्डु के पुत्र थे। महर्षि मार्कण्डेय जब मात्र पाँच वर्ष के थे तभी उनके पिता मृकण्डु को पता चला कि मेरे पुत्र की आयु तो केवल छह महीने की ही बची है तो उन्हें बड़ी निराशा और चिंता हुई। पिता मृकण्डु ने अपने पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार करवाया और उसे उपदेश दिया

यं कश्चिद् वीक्षसे पुत्रा भ्रममाणंद्विजोत्तमम्।
तस्यावश्यं त्वया कार्यं विनयादभिवादनम्॥

पुत्र! तुम जब भी किसी द्विजोत्तम को देखो तो विनयपूर्वक उसका अभिवादन अवश्य करना, उसे प्रणाम करना।

मृकण्डु का पुत्र अत्यंत आज्ञाकारी बालक था अतः उसने पिता द्वारा प्रदत्त व्रत को दृढ़तापूर्वक धारण किया। अभिवादन उसके जीवन का अभिन्न अंग बन गया। जो भी बालक के समक्ष आता बालक उसे आदरपूर्वक प्रणाम करना न भूलता। अभिवादनशीलता उसका संस्कार बन गया। एक बार सप्तऋषि भी उस मार्ग से जा रहे थे। बालक मार्कण्डेय ने संस्कारवश अत्यंत आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम किया। सप्तऋषियों ने बालक को दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया। सप्तऋषियों के आशीर्वाद से अल्पायु बालक मार्कण्डेय को दीर्घायु प्राप्त हो गई। अपनी अभिवादनशीलता के गुण के कारण वे चिरंजीवी हो गये।

दीर्घायु और स्वस्थ बने रहने के लिए अभिवादनशीलता व शिष्टाचार का पालन करना किसी तरह भी मँहगा सौदा नहीं। अतिथि ही नहीं परिचित-अपरिचित हर व्यक्ति का आदर-सत्कार करना हमारे अपने हित में है। ये पूर्णतः हमारे अपने हाथ में है कि हम अशिष्ट बने रहकर विभिन्न व्याधियों को आमंत्रित कर अस्वस्थ बने रहें तथा अल्पायु हों अथवा अभिवादनशीलता व शिष्टाचार का पालन कर स्वस्थ और दीर्घजीवी बनें।

एए.डी.-१०६-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-११००३४

# एक वाक्य क्या नहीं कर सकता

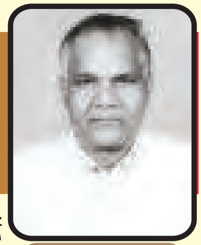

खुशहाल चन्द आर्य

मेरे प्यारे देश का इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी व्यक्ति द्वारा कहा गया एक वाक्य इतिहास को बिगाड़ भी सकता है और इतिहास को सुधार भी सकता है। एक देशी कहावत है कि 'एक चना क्या भाड़ फोड़ सकता है' परन्तु इतिहास इसके विपरीत है। वैसे तो इतिहास में अनेकों उदाहरण ऐसे मिलते हैं पर मैं यहाँ पर कुछ प्रसिद्ध उदाहरण ही प्रस्तुत करता हूँ:-

१. माता सीता द्वारा कहा गया एक वाक्यः- जब श्री रामचन्द्र जी को अपने पिता दशरथ द्वारा रानी कैकेई को दिए गए दो वचनों के आधार पर चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा, जब श्री राम सरयू नदी को पार करके एक भीषण जंगल में एक कुटिया बनाकर रह रहे थे तब वहाँ एक विलक्षण घटना घटी। उस कुटिया के चारों तरफ राक्षसों का ही वास था। वहाँ राक्षसों के राजा रावण का ही प्रभुत्व था। सभी राक्षस राजा रावण के अधीन थे। रावण जब सीता के स्वयंवर में

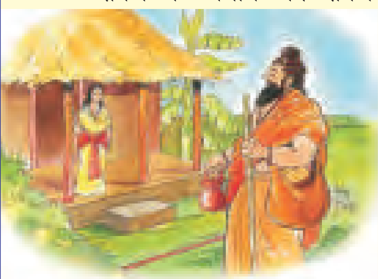

सम्मिलित हुआ था और सीता ने श्री राम के गले में माला डाल दी थी, तभी से रावण ने सीता को हरण करने की इच्छा बना रखी थी। यहाँ उसको एक बहाना भी मिल गया कि रावण की बहन स्वरूपनखाँ श्री राम या लक्ष्मण से विवाह करना चाहती थी । जब इन दोनों ने उसके प्रस्ताव को इंकार करके उसका अनादर कर दिया दूसरे शब्दों में उसकी नाक काट दी (यानि किसी की बात न मानना ही उसकी नाक काटना होता है) तभी से स्वरूपनखाँ श्री राम से क्षुब्ध थी और उसने अपने भाई रावण को अपनी नाराजगी बताई और सीता को हरण करने की पूरी रूपरेखा भी बता दी। रावण ने भी यह एक अच्छा अवसर देखकर अपने एक आज्ञाकारी राक्षस मारीच जो मायावादी था और रूप बदलने में बड़ा प्रवीण था उसको अपने पास बुलाया और उसको एक स्वर्ण रंग का हिरण बनकर सीता के आगे से निकलने की कहकर आगे की पूरी योजना बता दी। इस योजना के अनुसार मारीच स्वर्ण रंग का हिरण बनकर सीता के सामने से निकला और वह हिरण सीता के मन में भा गया। उसने श्रीराम को कहा पतिदेव! आप इस हिरण को हो सके तो जीवित पकड़ कर ले आओ ताकि मैं इसे बच्चे की तरह पाल-पोस कर मन बहलाव करूँ और यदि जीवित पकड़ कर नहीं आवे तो इसे मारकर ले आवें ताकि हम इसकी खाल को मृगछाला के रूप में काम में ले सकें। श्री राम ने सबसे बड़ी भूल यह की कि सीता के कहने से बिना कुछ सोचे-विचारे धनुष बाण लेकर उस हिरण के पीछे दौड़ पड़े और हिरण मायावी था ही उसने कुछ दूर जाकर इस प्रकार रोना आरम्भ कर दिया कि- 'हे लक्ष्मण! मुझे बचाओ, मुझे बचाओ!' सीता के कान में जब यह आवाज पड़ी तो वह भयभीत हो उठी और अपने देवर लक्ष्मण से कहने लगी कि तुम्हारे भाई पर कोई आपत्ति आ गई है जाओ तुम उन्हें आपत्ति से निकालो। लक्ष्मण ने अपनी भाभी को बहुत समझाया कि मेरे भाई श्री राम ऐसे कमजोर नहीं कि जो किसी आपत्ति में पड़ सकें। यह कोई राक्षसों का मायावी जाल है। आप चिन्ता मत करो भाई जी थोड़ी ही देर में आ जावेंगे। पर उस समय सीता माता ने जो वचन कहे उन्होंने पूरे इतिहास को बदल कर रख दिया। उसने उस यति- लक्ष्मण से कहा कि तेरे मन में पाप आ गया है। तू यह सोचता है कि भाई मर जावे तो सीता तुम्हारी हो जायेगी पर यह कदापि नहीं होगा। लक्ष्मण जैसे महान् तपस्वी के लिए यह शब्द असह्य थे और वह तुरन्त भाई जी की खोज में निकल पड़ा। आगे जो घटना घटी वह सर्वविदित है। सीता माता के इन्हीं कटु शब्दों ने रामायण की रचना कर डाली।

२. माता द्रौपदी द्वारा कहा गया कुवाच्यः- यह दूसरा दृष्टान्त हमें महाभारत में मिलता है। जब युधिष्ठिर ने जुआ खेलने से पहले अपना अलग राज्य हस्तिनापुर से दूर इन्द्रप्रस्थ में पाँचों भाईयों ने मिलकर बना लिया। तब युधिष्ठिर ने एक बहुत ही सुन्दर कलापूर्ण महल वहाँ बनवाया। इस महल की खूबियाँ यह थीं कि जहाँ पानी दिखता था वहाँ जमीन होती थी और जहाँ दरवाजा दिखता था वहाँ दीवार होती थी और जहाँ दीवार दिखाई देती थी वहाँ दरवाजा होता था। इस महल को देखने के लिए देश-विदेश के अधिकतर राजा महाराजा आये थे। उनमें युधिष्ठिर का चचेरा भाई दुर्योधन भी आया था। दुर्योधन जब महल देखने लगा तब उसे जहाँ पानी दिखाई देता था तब वह धोती को उठा लेता था और जहाँ धरती दिखाई देती थी तब वह धोती को नीचे कर लेता था और धोती भीग जाती थी। जब उसे कहीं दरवाजा दिखता था वह चलने लग जाता था और उसका माथा दीवार से टकरा जाता था। इस प्रकार वह अपने आप में बड़ा शर्मिन्दा हो रहा था।

तभी पाण्डवों की धर्मपत्नी ऊपर बैठी दुर्योधन को देख रही थी। द्रौपदी ने व्यंग्य कसते हुए कहा कि अन्धे के अन्धा ही पैदा होता है। यह सुनते ही दुर्योधन आग बबूला हो गया और मन में ठान ली कि इसका बदला मुझे जरूर लेना है। वह तुरन्त वहाँ से आ गया अपने मामा शकुनि से सारी बातें कहीं और किसी भी प्रकार इस अपमान का बदला लेने की कही। आगे जो कुछ हुआ वह सर्वविदित है। महाभारत जैसे महायुद्ध का होना द्रौपदी के व्यंग्यात्मक कथन का ही दुष्परिणाम था।

**३.चाणक्य द्वारा ली गई प्रतिज्ञाः-** मध्यकाल में मगध के राजा घनानन्द ने चाणक्य का अपमान किया था तब महान् नीतिवान चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं मगध राज्य का विनाश करके ही अपनी चोटी को बाँधूंगा अन्यथा खुली ही रखूँगा। इसी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए चाणक्य ने एक होनहार बालक जो अपने साथी बच्चों के साथ खेल रहा था

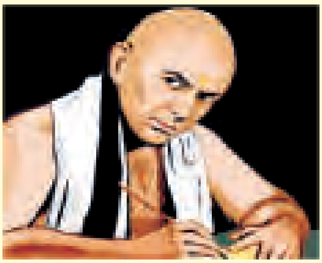

और उसी राजा की दासी का लड़का था उसकी योग्यता को देखकर उसको अपने पास रखकर उसे शस्त्र विद्या में निपुण किया और उसी के द्वारा घनानन्द को पराजित करवाया और मगध का राजा चन्द्रगुप्त मौर्य को बनाया। यह था चाणक्य के अपमान का बदला जिसके कारण मगध का महान् सम्राट मिट्टी में मिल गया।

**४. गुरुवर स्वामी विरजानन्द द्वारा पूछा गया प्रश्न-** सबसे अधिक यदि किसी एक वाक्य का प्रभाव पड़ा है तथा संसार को लाभ पहुँचा है तो वह है गुरुवर विरजानन्द द्वारा ब्रह्मचारी दयानन्द से पूछा गया प्रश्न- 'तुम कौन हो?' जब महर्षि दयानन्द किसी सच्चे गुरु की खोज में घूम रहे थे तब स्वामी पूर्णानन्द जो स्वामी विरजानन्द के गुरु थे उनके बतलाने से ब्रह्मचारी दयानन्द गुरु विरजानन्द की कुटिया मथुरा में सन् १८६० में पहुँचे। तब कुटिया बन्द थी। दयानन्द ने आवाज लगाई 'कृपया दरवाजा खोलें' अन्दर से आवाज आई- 'कि आप कौन हैं?' तब दयानन्द ने कहा 'मैं यही जानने के लिए आया हूँ कि मैं कौन हूँ?' बस यह उत्तर क्या था,मानो विश्व कल्याण का संदेश वाहक था। विरजानन्द जी ने जब यह उत्तर सुना तो वे गद्‌गद हो गए और समझ गये कि आज मेरे दरवाजे पर वही व्यक्ति खड़ा है जिसकी मुझे वर्षों से प्रतीक्षा थी। विरजानन्द जी ने दरवाजा खोला। दयानन्द ने गुरु जी के चरण छूकर नमस्ते की और कहा कि मैं ब्रह्मचारी दयानन्द हूँ और आप से विद्या सीखने आया हूँ। गुरु जी का पहला ही प्रश्न था कि तुमने अभी तक क्या क्या पढ़ा है? दयानन्द ने उन सब पुस्तकों के नाम बता दिए जो उन्होंने पढ़ी थीं। तब गुरुजी ने कहा दयानन्द! ये सब अनार्ष ग्रन्थ हैं, पहले तुम इनको यमुना में बहाकर आओ फिर मैं तुम्हें आर्ष ग्रन्थ पढ़ाऊँगा। दयानन्द एक पक्के गुरु भक्त थे, उन्होंने वैसा ही किया और गुरु विरजानन्द के पास पढ़ने लग गए। स्वामी विरजानन्द का स्वभाव बड़ा क्रोधी और हठी था। उनको हर किस्म से प्रसन्न रखते हुए दयानन्द ने लगभग तीन साल में पूरी विद्या पढ़ ली। गुरुजी को लौंग खाने का चाव था। विद्या प्राप्ति पर दयानन्द कुछ लौंग लेकर गुरुजी के पास गए और विनम्र निवेदन करते हुए गुरु दक्षिणा के रूप में गुरुजी को लौंग देने की कही तब गुरुजी की आँखों में आँसू भर आये और कहा,'दयानन्द! मैंने तुझे गुरु दक्षिणा में लौंग लेने के लिए नहीं पढ़ाया- तब दयानन्द ने कहा गुरुवर आप जो आज्ञा दें आपका शिष्य उसी को देने के लिए तैयार है। तब गुरुजी ने रोते हुए कहा कि-मैं दयानन्द तेरा जीवन ही लेना चाहता हूँ।' आगे और कहा कि 'विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला है। गरीब, असहाय की कोई नहीं सुनता है। सारी जनता अन्धकार में भटक रही है। तुझे वेद-ज्ञान द्वारा इस अन्धकार को मिटाना है और असहाय लोगों का सहारा बनना है।' स्वामी दयानन्द तथास्तु कह कर गुरुजी का आशीर्वाद लेकर कार्यक्षेत्र में कूद पड़े। यह सर्वविदित है कि स्वामी दयानन्द ने कितने दुःखों व कष्टों को जीवन भर सहन करते हुए अपने उद्देश्य को प्राप्त किया और अपने गुरुजी को दिए गए वचनों का पालन किया। यह सब 'आप कौन हो' वाक्य का ही सुपरिणाम था। ईश्वर महर्षि दयानन्द की जलाई हुई अग्नि को और अधिक प्रज्ज्वलित करे यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

मेसर्स गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स
१८० महात्मा गाँधी रोड, दोतल्ला
कोलकाता- ७०००७, चलभाष - ०९२३०६२५३५४

**हमारी विनम्र सम्मति में न तो रावण सीता-स्वयम्वर में उपस्थित हुआ और न ही 'अन्धों के पुत्र अन्धे ही होते हैं' यह वाक्य महारानी द्रौपदी ने कहा था।**

**- अशोक आर्य**

# गीता
## एक विजय ग्रन्थ

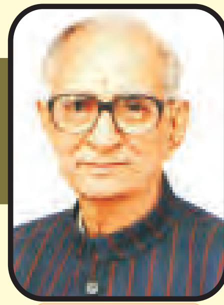

राधेश्याम धूत

गीता पढ़ता हूँ, तब मेरे मन में कुछ प्रश्न उठते रहते हैं। पहला तो यह है कि जिस समाज के पास संजीवनी शक्ति के रूप में भगवद्‌गीता जैसा ग्रन्थ उपलब्ध हो, जिसने कायरता व मोहवश हथियार डाल चुके अर्जुन में प्राण फूँककर उसे पुनः शस्त्र उठाने के लिए प्रेरित कर दिया था तथा जिसके दिव्य संदेश ने उसकी विजय का मार्ग प्रशस्त कर दिया था, उस समाज का पराभव कैसे हो गया? दूसरे गीता का निरन्तर पठन-पाठन होते हुए भी, हमें सदियों तक विधर्मी आक्रान्ताओं के अधीन क्यों रहना पड़ा? और आज भी स्थान-स्थान पर गीता-पाठ होते हुए भी तथा विभिन्न गोष्ठियों व प्रकाशनों के माध्यम से गीता का प्रचार प्रसार होते हुए भी हम अपना स्वरूप क्यों भूलते जा रहे हैं? हम अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा क्यों नहीं कर पा रहे हैं? गीता हमें अपने-अपने कर्तव्य-पथ पर चलने के लिए प्रेरित क्यों नहीं कर पा रही है? इतिहासकार तथा समाजशास्त्री इस परिस्थिति के अनेक कारण बता सकते हैं। लेकिन मेरी दृष्टि में, इसका मुख्य कारण गीता के वास्तविक संदर्भ, अर्थ व तात्पर्य को नजरअंदाज करना है।

कुछ लोग तो भ्रान्तिवश गीता को केवल हिन्दुओं का धर्म ग्रन्थ मानकर इसे पढ़ते ही नहीं हैं। कुछ इसे रिटायरमेन्ट के बाद वृद्धावस्था में ही पढ़ने लायक पुस्तक मानते हैं। कुछ गीता प्रेमी पढते भी हैं तो किसी कामना आधारित अनुष्ठान के रूप में। ऐसे बन्धु गीता का यांत्रिक तरीके से केवल पाठ करके ही अपने आपको धन्य मान लेते हैं। कुछ विद्यार्थी पढते हैं तो केवल पाठ्यक्रम का अंश होने के कारण। और जो गीता के गंभीर अध्येता हैं वे भी गीता के प्रयोजन तथा इसके मुख्य प्रतिपाद्य विषय के बारे में एकमत प्रतीत नहीं होते हैं। सभी इसे अपनी अपनी दृष्टि से देखते हैं। यह स्वाभाविक भी है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि किसी भी व्यक्ति का दृष्टिकोण उसकी शिक्षा, दीक्षा व्यक्तिगत व वर्गगत पूर्वाग्रह तथा उसके प्रयोजन से प्रभावित होता है। यही कारण है कि किसी विद्वान् को गीता में केवल ज्ञान योग की, किसी को भक्तियोग की तो किसी को केवल कर्मयोग की ही प्रधानता नजर आती है। ये सभी निश्चय ही भारतीय जीवन पद्धति की सर्वोच्च अवधारणायें हैं। भारतीय चिन्तन के अनुसार ज्ञान, भक्ति तथा कर्म साध्य भी हैं तथा मानव जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति के साधन भी हैं किन्तु मेरी दृष्टि में भगवद्‌गीता में इन तीनों का विवेचन हमारे उच्चतम अभीष्ट अथवा आदर्श की प्राप्ति के साधनों के रूप में भी हुआ है। लेकिन हमारे उस उदात्ततम लक्ष्य का वास्तविक स्वरूप प्रायः हमारी दृष्टि से ओझल रहता है। गीता के उपक्रम तथा उपसंहार पर यदि ध्यान दें तो स्पष्ट हो जायेगा कि मनुष्य जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हुए धर्म, यश, कीर्ति तथा समृद्धि अर्जित करना है।

गीता में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। शत्रु दो प्रकार के बताये गये हैं,जो हमारी जय यात्रा में बाधक बनते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर हमारे प्रबल शत्रु हैं हमारी मानासिक दुर्बलतायें, जिनमें प्रमुख हैं कायरता और मोह तथा काम व क्रोध। कायरता तथा मोह हमें हमारे पथ से विचलित कर देते हैं। काम और क्रोध हमारी बुद्धि को भ्रष्ट कर देते हैं। सामाजिक अथवा राष्ट्रीय संदर्भ में अधर्म व अन्याय हमारे विकट शत्रु माने गए हैं। धर्म के विरुद्ध चलने वाले आक्रान्ताओं के लिए गीता में आततायी व दुष्कृताम शब्द प्रयोग किए गए हैं। ऐसे तत्व समाज में अशान्ति व अराजकता पैदा करते हैं जिसके कारण न तो भौतिक विकास संभव है न आध्यात्मिक उत्कर्ष। इसलिए गीता के अनुसार जीवन में सिद्धि प्राप्त करने के लिए साधना के साथ साथ समाज में दुश्मनों का उन्मूलन भी उतना ही आवश्यक है।

गीता हमें उपरोक्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए मानसिक व शारीरिक दोनों दृष्टियों से सक्षम बनाती है। इसी उद्देश्य से गीता में मन व शरीर दोनों को स्वस्थ रखने से सम्बद्ध विविध विषयों का सूत्र रूप में समावेश किया गया है। गीता में वर्णित इन सभी विषयों का विवेचन इस संक्षिप्त आलेख में करना संभव नहीं है। न इस आलेख के पीछे मेरा यह उद्देश्य ही

है। मेरा अभिप्राय गीता के बारे में कुछ भ्रान्तियों का निराकरण करना तथा गीता के मुख्य विषय तथा फलश्रुति की ओर ध्यान आकर्षित करना ही है।

गीता ईसाइयों की बाइबिल अथवा इस्लाम की कुरान की भाँति किसी जाति विशेष का धर्मग्रन्थ नहीं है। गीता के आधार पर कोई सम्प्रदाय अथवा मजहब नहीं चलाया गया है। धर्म के प्रचलित संकुचित अर्थ में भी इसमें किसी जाति के धर्म का प्रतिपादन नहीं किया गया है। गीता में धर्म शब्द का प्रयोग अनेक बार अवश्य हुआ है लेकिन सर्वत्र कर्तव्य अथवा मानव धर्म के अर्थ में ही हुआ है। इसलिए यदि गीता को धर्मग्रन्थ माना भी जाता है तो यह समस्त मानव जाति का धर्मग्रन्थ है। यों गीता को व्याख्यायित करना कठिन है, लेकिन यदि परिभाषित करना ही हो तो मेरी दृष्टि में गीता को 'विजय ग्रन्थ' कहा जा सकता है।

अब प्रश्न है, गीता का मुख्य प्रतिपाद्य विषय क्या है? गीता के अध्ययन का उद्देश्य अथवा लाभ क्या है? इन प्रश्नों के उत्तर के लिए पहले उन परिस्थितियों पर दृष्टिपात करना आवश्यक है, जिनमें गीता का प्रादुर्भाव हुआ था। इस दृष्टि से संक्षेप में इतना स्मरण करना ही पर्याप्त होगा कि पाण्डवों के प्रति हुए घोर अन्याय के विरुद्ध हुए धर्मयुद्ध में अर्जुन ने आततायियों के संहार का संकल्प लिया था। किन्तु शत्रुसेना को देखकर वह कायरता से ग्रस्त हो गया। तथा कहाँ तो विजय का संकल्प लेकर चला था और कहाँ त्याग व पलायन की बातें करने लगा। लेकिन गीता के संदेश में उसका मोह नष्ट हो गया। उसकी स्मृति वापस आ गई। अपने कर्तव्य का बोध हो गया। और उसे विजयश्री प्राप्त हो गई। इससे स्पष्ट हो जाता है कि गीता का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है कायरता के वशीभूत हुए व्यक्ति को उसके कर्तव्य का पुनः बोध कराना तथा उसकी सफलता का मार्ग प्रशस्त करना। तात्विक दृष्टि से देखें तो प्रतीत होगा कि यह केवल अर्जुन की ही नहीं वरन् आम आदमी की कहानी है। भारत पर विधर्मी आक्रान्ताओं के आक्रमण के समय तत्कालीन भारतवासियों की स्थिति भी अर्जुन जैसी ही हो गई थी। लेकिन उस समय तक गीता का ज्ञान प्रायः विस्मृत हो चुका था क्योंकि तब तक हममें से कुछ तो गीता को त्याग ही चुके थे और कुछ गीता का काल्पनिक अर्थ लगाने लगे थे। इसका परिणाम हमारे सामने है। मुझे तो लगता है कि आज भी न्यूनाधिक रूप में वैसी ही स्थिति बनी हुई है लेकिन गीता के आदेश- 'जित्वा शत्रून्' का हम कितना पालन कर रहे हैं, इसका विवेचन करने की आवश्यकता नहीं है।

जीवन संघर्ष में विजय हासिल करने के लिए प्रबन्धन कला में निष्णात होना आवश्यक है। उतना ही आवश्यक अपने आप को समझना, भयमुक्त होना तथा स्थिर बुद्धि से निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त करना। इन बिन्दुओं पर गीता में बड़े उपयोगी सूत्र उपलब्ध हैं। इस दृष्टि से मैं गीता को प्रबन्धन कला पर सर्वोत्तम कृति तथा मनोविज्ञान पर विश्व की पहली पुस्तक मानता हूँ।

एक और दृष्टि से देखें तो गीता वस्तुतः जीवन की पाठशाला के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की एक ऐसी पुस्तक है जिसमें पहली कक्षा से अंतिम कक्षा तक के पाठ दिए हुए हैं। यह जहाँ गीता की अद्भुत विशेषता है, वहीं संकट का कारण भी है। संकट इसलिए क्योंकि संपूर्ण पाठ्यक्रम एक ही पुस्तक में उपलब्ध होने के कारण यदि जीवन संग्राम की पाठशाला का पहली कक्षा का विद्यार्थी अनधिकारपूर्वक अंतिम कक्षा में पढ़ाये जाने वाले पाठ (श्लोक) पढ़ने लगेगा तो वह इनका गलत व संदर्भहीन अर्थ लगाकर भ्रमित हो जायेगा। उदाहरणतया यदि पहली कक्षा का विद्यार्थी गीता के पहले पाठ 'क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तम'(हृदय की दुर्बलता छोड़कर उठो!) पर ध्यान देने के बजाय अंतिम कक्षा के पाठ- 'सर्वधर्मान्परित्यज मामेकं शरणं व्रज'(सब धर्मों-कर्तव्यों को छोड़कर मेरी शरण में आजा) पर चिन्तन करने लगेगा तो अपने लक्ष्य से विचलित हो जायेगा। मुझे लगता है कि गीता के मूल तात्पर्य को न समझ पाने का यह भी एक कारण है। अब अन्त में गीता का अंतिम श्लोक देखें। इसमें वेदव्यास गीता की फलश्रुति बताते

हुए घोषणा करते हैं कि जहाँ श्री कृष्ण हैं, गीता का संदेश है, तथा जहाँ अर्जुन शिष्य है, वहाँ श्री यश-कीर्ति, विजय, भूति समृद्धि तथा अचल नीति सुनिश्चित है-

तत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिमम॥ १८/७८

इस प्रकार गीता का मूल तात्पर्य जीवन में कायरता, काम व क्रोध आदि मानसिक दुर्बलताओं से मुक्ति तथा समाज व राष्ट्र में व्याप्त अन्याय और अधर्म पर विजय प्राप्त करना है। कहते हैं, जिसका लोक सुधर जाता है, उसका परलोक तो स्वतः ही सुधर जाता है। यहाँ प्रसंगवश उल्लेख करना उचित होगा कि गीता जिस महाभारत ग्रन्थ का अंश है, उसके रचनाकार कहते हैं कि उनका जय महाभारत का प्रारम्भिक नाम नामक इतिहास विजय की कामना रखने वालों को ही सुनना-पढ़ना चाहिए। यह बात गीता के लिए भी सत्य है।

- तीर्थराज, जेकब रोड
सिविल लाइन्स, जयपुर 302006
मोबाइल 9829063123

# समाचार

### दु:खद समाचार

आर्यजगत् के प्रसिद्ध मनीषी विद्वान् गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, हरदुआगंज, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश के प्राचार्य डॉ. हरवीर सिंह(आचार्य बुद्धदेव) को दिनांक २८.११.१३ सायंकाल अज्ञात हमलावरों द्वारा गोली मार दी गई। आचार्य के साथ गुरुकुल के ब्रह्मचारी को भी निशाना बनाया गया था। पर ईश कृपा से वह बच गया। समाचारों के अनुसार गुरुकुल की बेशकीमती जमीन पर निगाह लगाये लोगों का यह कार्य है। गुरुकुल की रक्षा में आचार्य जी को अपना बलिदान करना पड़ा। इस दु:खद घड़ी में न्यास और सत्यार्थ सौरभ परिवार आचार्य जी के परिवार व गुरुकुलवासियों के प्रति शोक संवेदना प्रकट करता है।

### अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् पंडित शिवनारायण उपाध्याय का सम्मान

२७ अक्टूबर २०१३ को सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् उपाध्याय जी का

सम्मान हाड़ौती क्षेत्र के नागरिकों द्वारा किया गया। श्रीफल एवं शॉल के अतिरिक्त इस सार्वजनिक अभिनन्दन के अवसर पर २१ हजार रु. की राशि भी पंडित जी को सेवार्पित की गई।

–राजेन्द्र कुमार आर्य, वैदिक प्रवक्ता

### भगतसिंह की जयन्ती मनाई

आर्य समाज, रामपुरा कोटा द्वारा संचालित मातृ सेवा सदन एवं बाल भारती आर्य शिशुशाला बालिका विद्यालय में भगतसिंह की जयन्ती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर आर्य समाज के मंत्री एवं विद्यालय के व्यवस्थापक श्री डी.पी.मिश्रा ने भगतसिंह के जीवन पर सत्यार्थ प्रकाश के प्रभाव की चर्चा की। उन्होंने कहा कि भगतसिंह चाहते तो असेम्बली में बम फेंकने के बाद भाग सकते थे परन्तु वे अपनी गिरफ्तारी व बलिदान देकर जनता को जाग्रत करना चाहते थे ताकि एक भगतसिंह के अन्त के साथ हजारों भगतसिंह तैयार हो जायें। इस अवसर पर आर्य परिवार संस्था कोटा के मंत्री श्री इन्द्रकुमार सक्सेना, पूर्णिमा सत्संग समिति के प्रधान श्री राजेन्द्र सक्सेना, आर्य समाज भीमगंजमंडी के पूर्व मंत्री श्री राजेन्द्र आर्य ने भगतसिंह के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। विद्यालय के छात्रों द्वारा भगतसिंह के जीवन पर नाटिका प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती मृदुला सक्सेना द्वारा किया गया।

– पुष्पा भुलियान

### कोटा नगर में वैदिक सत्संगों का आयोजन

दिनांक २६ अक्टूबर से ३१ अक्टूबर २०१३ तक नगर के सार्वजनिक स्थलों पर वैदिक सत्संगों का आयोजन किया गया जिसमें प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी, बिजनौर द्वारा सारगर्भित प्रवचन तथा भजनोपदेशक श्री दिनेश दत्त दिल्ली के भजनोपदेश का लाभ श्रोताओं ने लिया। कार्यक्रम के प्रवक्ता श्री राजेन्द्र आर्य ने बताया कि ये सत्संग क्रमशः मिलन गार्डन, रेलवे सोसायटी, कुन्हाड़ी, खेड़ा रसूलपुर तथा मातृसेवा सदन, रामपुरा में हुए। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री राजेन्द्र सक्सेना, प्रेमनाथ कौशल, इन्द्रकुमार सक्सेना, डी.पी.मिश्रा, भेरूलाल आर्य, हनुमान आर्य आदि का विशेष सहयोग रहा।

– राजेन्द्र आर्य

### प्रो.कथूरिया सम्मानित

राजस्थान के अग्रणी साहित्यिक, सांस्कृतिक-शैक्षिक प्रतिष्ठान साहित्य मंडल नाथद्वारा द्वारा भावनगर विश्वविद्यालय, गुजरात के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ.सुन्दर लाल कथूरिया को श्री मनोहर लाल कोठारी सम्मान से सम्मानित करते हुए ग्यारह हजार रु. की सम्मान राशि के साथ अभिनन्दन पत्र, शॉल, अंगवस्त्र एवं श्रीफल भेंट किए गए। उन्हें यह सर्वोच्च सम्मान उनकी विद्वता एवं समर्पित हिन्दी सेवा के लिए प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ. कथूरिया ने हिन्दी सेवा का निरन्तर व्रत लेने के साथ कहा कि वे आगामी वर्ष से इतनी ही राशि संस्थान को दान देंगे ताकि उनकी माता श्रीमती कृष्णा देवी कथूरिया की स्मृति में संस्था किसी सुयोग्य विद्वान् को एक और पुरस्कार प्रदान कर सके।

### बधाई शत-शत बार

राजस्थान विधान सभा के आम चुनावों ने अभूतपूर्व परिणाम दिए हैं। मेवाड़ का लोकप्रिय नेतृत्व प्रदान करने वाले, न्यास के सर्व सहयोगी मान्य भाई गुलाबचन्द कटारिया तथा मान्या बहिन श्रीमती किरण माहेश्वरी ने अभिलषित विजयश्री दर्ज कर ली है। इस अवसर पर उन्हें न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई देते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आप लोगों को वह शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें कि आप मन्त्री के रूप में सुनिश्चित मिलने वाले अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए राजनीति के उच्चतम आदर्शों के सोपानों को स्पर्श कर सकें। मेवाड़ ही नहीं समूचा राजस्थान आपसे आशान्वित है।

### निशुल्क होम्योपेथिक चिकित्सा एवं परामर्श शिविर सम्पन्न

उदयपुर, १५ दिसम्बर १३। आर्य समाज-हिरणमगरी, उदयपुर की ओर से आर्य समाज भवन में निशुल्क होम्योपेथी चिकित्सा एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में १३५ जन लाभान्वित हुए जिसमें डॉ. प्रितेश मेनारिया, डॉ. संध्या शर्मा के कुशल नेतृत्व में विभिन्न रोगों का परामर्श व निशुल्क दवा का वितरण किया गया। शिविर संयोजक डॉ. अमृतलाल तापडिया ने शिविर के आयोजन व आर्य समाज के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए शिविर का शुभारम्भ किया। समाज के प्रधान भंवरलाल आर्य, दयानन्द कन्या विद्यालय के मंत्री कृष्ण कुमार सोनी आर्य समाज के मंत्री ललिता मेहरा ने स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

- रामदयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

### शोक संवेदना-श्री मिठाई लाल सिंह जी को पुत्री शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान व इस न्यास के वरिष्ठ न्यासी माननीय बाबू मिठाई लाल सिंह जी की बड़ी पुत्री का पीलिया रोग के कारण दु:खद निधन हो गया। इससे सभी न्यासियों को अतीव शोक है। बाबू जी के समस्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

-न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार

# हलचल

## शादियों के लिए भी अब आरटीआई का सहारा

सूचना के अधिकार का एक दिलचस्प प्रयोग सामने आया है। मेरठ पुलिस के अनुसार इस अधिनियम के अंतर्गत उनके पास ३७५ आवेदन प्राप्त हुए हैं जिनमें कि वधू-पक्ष द्वारा, होने वाले दूल्हे की पृष्ठभूमि और अगर कोई आपराधिक पृष्ठभूमि है तो उसकी जानकारी माँगी गई है। मेरठ के पुलिस अधीक्षक के अनुसार सहारनपुर और अनूपशहर से दो लड़कियों द्वारा ऐसी सूचनाएँ माँगी गईं हैं जिसकी जानकारी उन्हें शीघ्र दे दी जायेगी।

## न्यास में पधारे डॉ. वेदप्रताप वैदिक

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में सतत् संलग्न अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार आर्य पुत्र- डॉ. वेदप्रताप वैदिक अपने उदयपुर प्रवास के अवसर पर नवलखा महल पधारे। उन्होंने नवलखा महल स्थित चित्रदीर्घा 'आर्यावर्त्त', स्वचालित घूमते हुए सत्यार्थप्रकाश स्तम्भ, संगीतमय फब्वारे, स्वामी जी के जीवन पर निर्मित 'दयानन्द चरितम्' का अवलोकन किया तथा सभी प्रकल्पों को अद्भुत बताते हुए सुझाव दिया कि ऐसी दर्शनीय सामग्री भारतभर में कहीं नहीं है। अतएव इसका प्रचार किया जाना चाहिए ताकि आर्यजनों को जानकारी हो सके तथा वे इस पवित्र स्थल के दर्शनार्थ पधार सकें। इस अवसर पर नगरस्थ आर्य समाजों के प्रधान व न्यास के अधिकारियों ने डॉ. वैदिक का हार्दिक स्वागत किया।

---

न्यास के अतीव सहयोगी परिवार, आर्य समाज हिरणमगरी की मन्त्री श्रीमती ललिता मेहरा व (स्व.) वीरेन्द्र मेहरा के सुपुत्र चि. सुकृत का शुभ विवाह श्री बी. एल. शर्मा की सुपुत्री सौ. का. डॉ. संध्या शर्मा से दिनांक २०/११/२०१३ को आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्रोत्रिय जी द्वारा विवाह संस्कार में विनियुक्त मन्त्रों के हृदयग्राही-सरस व्याख्यान ने उपस्थित जन समुदाय को प्रमुदित कर दिया।

– नवनीत आर्य

## आर्य समाज का शताब्दी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया

आर्य समाज भोजपुर-खेड़ी बिजनौर का शताब्दी महोत्सव १९,२० व २१ अक्टूबर को मनाया गया। इस महोत्सव के अवसर पर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया तथा आर्य समाज की शत वार्षिक अनवरत यात्रा की स्मारिका भी प्रकाशित की गई।

– वैद्य आनन्द प्रकाश आर्य

## प्रतिस्वर

मैं सत्यार्थ सौरभ जैसी उच्चकोटि की पत्रिका का आजीवन सदस्य हूँ। पत्रिका अतीव सुन्दर व ज्ञानवर्धक है। अक्टूबर अंक में 'एक सम्पूर्ण उपचार पद्धति है निश्चयात्मक स्वीकारोक्ति' पढ़ा। अत्यन्त प्रभावी लेख है। कृपया लेखक का सम्पर्क सूत्र देने का कष्ट करें।

– दिवाकर जोशी, पिथौरागढ

## वैदिक कार्यकर्त्ता परिवार सम्मेलन

नवलखा महल, उदयपुर में आर्य परिवारों के सदस्यों में परस्पर प्रगाढ़ सम्बन्धों में निरन्तरता सुनिश्चित करने तथा वैदिक संस्कृति का गम्भीर प्रसरण करने के उद्देश्य से दिनांक २२.१२.२०१३ को यह मनोरंजक, प्रेरणास्पद सारगर्भित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में संस्कार सम्प्रेषण के अनेक पहलुओं को स्पर्श किया गया।

महर्षि दयानन्द विद्यालय, फतेहनगर के प्रबन्धक श्री सुरेश मित्तल के निर्देशन में तैयार 'कठपुतली शो' से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यह 'शो' केवल मनोरंजक ही नहीं, वैदिक भजनों तथा शिक्षात्मक सम्वादों से गुम्फित होने के कारण प्रेरणास्पद भी था।

**वैदिक ज्ञान परीक्षा** शो के उपरान्त चाय-बिस्किट के दौर के बीच परिचय होता रहा। सभी सम्भागियों को स्वाध्याय हेतु पूर्व में वैदिक साहित्य भेजा गया था। तदाधारित प्रतियोगिता प्रो. ए. एल. तापड़िया के निर्देशन में वरिष्ठ व कनिष्ठ वर्ग बनाकर ली गयी। इस परीक्षा में वरिष्ठ वर्ग में सर्वश्री धीरज अरोड़ा, इन्द्रप्रकाश यादव व प्रमोद उज्ज्वल ने तथा कनिष्ठ वर्ग में चि. हिरेण गुप्ता, गौरव खण्डेलवाल, संस्कार खण्डेलवाल ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी को न्यास द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर नवनीत आर्य व सुरेश पाटोदी के निर्देशन में 'वैदिक हाउजी' का आयोजन किया गया। परम्परागत हाउजी निरर्थक व समय नष्ट करने वाली होती है, पर उक्त हाउजी में शब्दों के उच्चारण के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश प्रथमसमुल्लासस्थ ईश्वर के नाम बनते हैं। इस प्रतियोगिता में प्रथम पंक्ति, मध्यम पंक्ति, अंतिम पंक्ति तथा हाउस के पुरस्कार वितरित किए गए। यज्ञोपरान्त भजन-प्रवचन के क्रम में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जयपुर से पधारे, न्यास के संरक्षक श्री बी. एल. अग्रवाल जी ने Sharing की नई पद्धति अपनाते हुए ११-१२ सम्भागियों को साथ लेकर आर्य समाज के दश नियमों की व्याख्या की। श्री अग्रवाल का अभिनन्दन न्यास-मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन आर्य समाज, हिरणमगरी के उपमंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया। ऐसे कार्यक्रम निरन्तर होते रहने चाहिए के संदेश के साथ शान्ति पाठ व सहभोज के उपरान्त कार्यक्रम का समापन हुआ।

**– नारायण मित्तल, संयोजक**

# शतरंज- राजतन्त्र प्रजातन्त्र

-डॉ.त्रिलोकी नाथ क्षत्रिय

शतरंज निठल्लों का खेल है। राजनीति भी निठल्लों का खेल है। शतरंज और राजनीति में जो डूबा सो ऐसा डूबा कि कभी भी उबर नहीं सका। शतरंज के खिलाड़ियों को न युद्ध की परवाह होती है, न बाढ़ की, न घर की। उनका सारा ध्यान चौसठ खानों तथा पैदल, हाथी, घोड़े, ऊँट और वजीर पर सिमटा रहता है, जो दुबके राजा को बचाने का प्रयास करते रहते हैं।

राजनीति के भी खिलाड़ियों को न घर की परवाह होती है, न बाहर की। उनका सारा ध्यान चौसठ मंत्री पदों पर लगा रहता है। जिसके लिए वे कभी पैदल,कभी हाथी, कभी ऊँट का रोल अदा करते रहते हैं। शतरंज और राजनीति दोनों ही मारकाट के खेल हैं। खेल बोर्ड में या देश में होता है, लेकिन दोनों पक्षों के दिमाग में मारकाट की भयानक साजिश चलती रहती है।

राजतंत्र का शतरंज युद्ध और प्रजातंत्र का शतरंज युद्ध एक दूसरे को सर के बल खड़ा पाते हैं। राजतंत्र शतरंज पुराने नियमों पर आधारित था जिसमें यदि कोई मुहरा दूसरे के जोर पर है तो उसे नहीं मारा जा सकता, चाहे वह पैदल का ही क्यों न हो। परिणामतः पैदल के जोर पर वजीर, घोड़े, हाथी, ऊँट आगे रहते थे तथा उनके मरने के बाद पैदल मरते थे। राजा, सेनापति युद्ध के सहभागी होते थे, अग्रिम मोर्चा संभालते थे। सारे वार उन्हें झेलने पड़ते थे। प्रायः वे पहले मरते थे। प्रजातंत्र शतरंज में पैदल दो-दो घर चल सकता है। वह आगे रहता है। मरने मारने का जोर से कोई सम्बन्ध नहीं, जो जिसे चाहे जोर बेजोर मार सकता है। इस युद्ध व्यवस्था में सेनापति, राजा युद्धक्षेत्र जाते भी नहीं हैं, सुदूर प्रचालन से पैदल सैनिकों को लड़ाते हैं। मरते पैदल हैं। अंग्रेजों ने भारत-बोर्ड पर जो शतरंज खेला उसमें सफेद-काले मुहरे हिन्दू-मुसलमान थे, जो ज्यादा करके पैदल थे। अंग्रजों के हाथी, घोड़े आदि पैदलों को आखरी खाने में पहुँचने से रोकते रहे, कहीं वे वजीर न बन जाएँ। अंग्रेज शतरंज खेलखेलकर चले गए और गोरे अंग्रेज गोरे कपड़ों वालों को शासन दे गए। गोरे कपड़े वालों ने सारी शतरंज अंग्रेजों से ही सीखी थी। इनके सिरमौर वहीं खेले खाए थे। ये लार्ड मैकाले और मैकियाविली के प्रिंस थे। इन्होंने देश में नई शतरंज पैदा की। भाषाई पैदल बनाए, साम्प्रदायिक पैदल बनाए। हिन्दुओं में भी, मुसलमानों में भी सफेद-काले मुहरे बनाए। और कई बार तो काल्पनिक रेखाओं से बँटे घर के टुकड़ों से भी हाथी, घोड़ा, ऊँट बनाकर शतरंज खेला। पैदलों को आगे कर-कर के कुचला। इतना कुचला कि आज हर पैदल कराह रहा है, हर पैदल घायल है। तब बादशाहों को शतरंज का भी यदा कदा शौक चर्राता था, तो वे अपने बत्तीस सैनिक चुन लते थे। चौसठ खानों का बड़ा मैदान बना लेते थे। दोनों अटारियों पर रानियों समेत वे काले सफेद वेशभूषाधारी पैदल, हाथी, घोड़ा, ऊँट, सैनिकों को खानों में हर चाल पर वास्तव में जाने का निर्देश देते थे। सैनिकों को उनकी आज्ञाओं पर मरना पड़ता था। दो राजा कम बत्तीस याने तीस सैनिक एक खेल में मारे जाते थे। आज जब प्रजानन, राजनेता, पक्ष-विपक्षी शतरंज खेलते हैं तो कभी मण्डल, कभी कमण्डल, कभी अण्डल, कभी बण्डल, कहीं पंजाब, कहीं आसाम, कहीं कश्मीर में रोज काले सफेद पैदल मारे जाते हैं। ये घिनौना शतरंज फौरन बंद होना चाहिए। जनता भले ही आठ पैदलीय शतरंजी पैदल हों, बुद्धिजीवी न तो पैदल बने, न इस व्यवस्था के हाथी, घोड़े, ऊँट ही बने।

शतरंज की हार सबसे बुरी हार होती है। जुए से भी बुरी हार। हारने वाले की आत्मा तक गहरी उतर जाती है। एक बार मैं अन्ध विद्यालय के एक बच्चे से शतरंज में हार गया था। वह अन्धा बच्चा मेरी तुलना में शतरंज बोर्ड तथा मोहरों की स्थिति अधिक देख सकता था। उसकी अँगुलियों में आँखें थीं। फैली हथेलियाँ हर मोहरे की स्थिति पकड़ लेती थीं। उसके दिमाग का शब्द चित्र महान् था। मैं अपने कॉलेज का श्रेष्ठ शतरंज खिलाड़ी हार गया था। वह गौरवमय हार थी। पर आज तक वह हार साए के समान मेरे साथ है। उस अन्धे चौदह वर्षीय शतरंज के खिलाड़ी में विश्व चैम्पियन बनने की संभावनाएँ थीं। पर व्यवस्था उससे ज्यादा अन्धी थी इसलिए उसे न देख सकी। खैर शतरंज की हार कभी नहीं भूलती।

राजनीति की हार भी कभी नहीं भूलती। हारा राजनीतिज्ञ आत्मा तक हिल जाता है। दुबारा लड़ता है। धरती पकड़ नाम का एक उत्तम व्यक्तित्व अभी सत्रह स्थानों से लड़ा है। उस पर कई हारों का काला नशा है। उसे अभी तक समझ नहीं आई राजनीतिक शतरंज की। उसने जनता को काला, गोरा, लाल, सफेद नहीं बाँटा। जिसने पैदल मारने वाले हाथी घोड़े, ऊँट नहीं रचे वो भला प्रजातंत्र शतरंज में क्या जीतेगा? उसे उम्रभर हारना है, उम्रभर चुनाव लड़ना है क्योंकि हार उसकी आत्मा तक पहुँच चुकी है। प्रजातंत्र शतरंज में अरे बुद्धिजीवियों! तुम सब धरतीपकड़ हो। सर्वाधिक धरतीपकड़ कीड़े, मकोड़े, चींटी, दीमक आदि होते हैं। तुम्हारी हस्ती ही क्या है? पाँच लाख मतों में चार-पाँच सौ वोटों की। हाँ! अपने पे किसान, दीप, पंजे, कमल आदि का दाग लगवा लो तो हस्ती बढ़ जायेगी। चरवाह जानवरों को पहचान के लिए दागता है। प्रजातंत्र यही दगनी व्यवस्था है। दागित मत हो! मेरा आह्वान है गलत व्यवस्था के गलत आकलन से स्वयं को कम मत समझो। व्यवथा तोड़ बनो। सुकरात, ब्रूनो, स्पिनोजा, गैलीलियो, दयानन्द बनो। राजनैतिक शतरंज की घिनौनी बिसात उलट दो।

बी-५१२ सड़क ४, स्मृति नगर
भिलाई नगर-४९००२०( छत्तीसगढ़ )

# दयानन्दीय शिक्षानीति

सत्यार्थ-पीयूष

- श्रीमती गार्गी माथुर, जोधपुर

दयानन्दीय शिक्षा नीति के निर्देशक तत्त्वों को संक्षेप में निम्न बिंदुओं में सूत्रबद्ध किया जा सकता है।

१. विद्यार्थी का मुख्य प्रयोजन विद्याभ्यास, शास्त्राध्ययन, विविध विषयों में पाण्डित्य प्राप्त करना इत्यादि तो है किन्तु साथ ही उसे चरित्र निर्माण की ओर मुख्य रूप से ध्यान देना चाहिए।

२. पाठ्यग्रन्थों में उन्हीं ग्रन्थों का समावेश होना चाहिए जो साक्षातकृतधर्मा मन्त्रद्रष्टा ऋषियों द्वारा निर्मित हैं। ऋषि-कृत ग्रन्थ विवेक को प्रश्रय देने वाले, वैज्ञानिक सोच की ओर प्रवृत्त करने वाले तथा मनुष्य की चिन्तन प्रक्रिया को बढ़ाने वाले होते हैं, जबकि अनार्ष ग्रन्थ अध्येता के विवेक को कुण्ठित करने वाले तथा अंधविश्वासों को बढ़ाने में सहायक होते हैं। स्वामीजी को यह आर्ष दृष्टि दण्डी विरजानन्द जी से प्राप्त हुई थी।

३. ईश्वरीय ज्ञान वेद और तदनुकूल शास्त्रों की शिक्षा पर सर्वोपरि ध्यान दिया जाना चाहिए।

४. शास्त्रज्ञान के साथ साथ प्रोद्योगिकी, कला-कौशल तथा जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक विषयों का भी समुचित ज्ञान कराना चाहिए।

५. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। भारत के संदर्भ में प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए संस्कृत ज्ञान अनिवार्य हो तथा वह इस देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी (आर्य भाषा) का समुचित ज्ञान प्राप्त करे।

६. कन्याओं के शिक्षण की महत्ता को स्वीकार किया जाना आवश्यक है। तदनुकूल बालिकाओं के उच्च अध्ययन के लिए सभी उपाय किये जावें।

७. छात्र-छात्राओं की सहशिक्षा चरित्र निर्माण के लिए घातक सिद्ध होगी, अतः दोनों के पृथक् शिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

८. शिक्षा के क्षेत्र में राजा और रंक, धनी और गरीब का भेद अवांछनीय है। सभी को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए।

९. गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अध्ययन की आदर्श पद्धति के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

१०. बालक-बालिकाओं की अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करना राजा (शासक) का आवश्यक कर्त्तव्य है।

११. अवसर और अनुकूलता होने पर विदेशी भाषाओं का अध्ययन भी अवश्य करना चाहिए।

१२. शिक्षा के द्वारा स्वाभिमान, स्वदेश प्रेम, स्वावलम्बन तथा आस्तिकता जैसे गुणों का विकास प्रत्येक विद्यार्थी का लक्ष्य होना चाहिए।

# भव्य सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन सह राष्ट्र रक्षा महायज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज, नेमदार गंज, (नवादा, बिहार) द्वारा दिनांक २१ से २४ नवम्बर २०१३ को डी.ए.वी.जोन-२ एवं मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा के संयुक्त तत्वावधान में हर्षोल्लास के साथ क्षेत्रीय जनता के सहयोग आगत अतिथियों, विद्वानों के अथक प्रयास से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् मुम्बई के आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री, वैदिक प्रवक्ता पंडित वेदप्रकाश श्रोत्रिय दिल्ली, पंडित श्री दिनेशदत्त भजनोपदेशक, दिल्ली, बहिन रंजना तिवारी, कानपुर, पंडित दयानन्द सत्यार्थी, भजनोपदेशक, समस्तीपुर, पंडित श्री अमरदेव भजनीक ने अपने भजन प्रवचन से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के उपमंत्री श्री विनय आर्य, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री गंगाप्रसाद जी-मंत्री, श्री रमेन्द्र गुप्ता-कोषाध्यक्ष, श्री सत्यदेव गुप्ता, आर्य प्रतिनिधि उपसभा बिहार के प्रधान श्री यू.एस. प्रसाद-निदेशक, डी.ए.वी. जोन-२, गया तथा डी.ए.वी. के विभिन्न स्कूलों के प्राचार्यगण, कानपुर राजार्य सभा के श्री रघुराजशास्त्री, स्थानीय नवादा जिला के सम्माननीय चिकित्सक डॉ मनोज कुमार एवं डॉ. पिंकी वरनवाल मुख्य

अतिथि रहे।

प्रमंडलीय सभा के सभी पदाधिकारीगण, डी.ए.वी. के धर्माधिकारी नवादा जिला आर्य सभा के अधिकारियों, क्षेत्रीय विशिष्ट गणमान्य सज्जनों,बिहार के ३८ जिलों से पधारे प्रतिनिधिगण, नेपाल देश से आये भद्रपुरुषों एवं महिलाओं को पुष्प माला, शॉल एवं सत्यार्थ प्रकाश से सम्मानित किया गया। सभी विद्वानों व भजनोपदेशकों की प्रस्तुतियाँ, विशेषरूप से आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय के प्रवचन इतने सारगर्भित थे कि खचाखच भरे पण्डाल में से कोई श्रोता घंटों तक हिलने का नाम भी नहीं लेता था। पूरे गाँव में ध्वनि विस्तारक यंत्र की व्यवस्था होने से जो पाण्डाल में न आ सके उन्होंने भी कार्यक्रम से प्रेरणा प्राप्त की।

इससे पूर्व २८ नवम्बर को निकाली गई शोभायात्रा की छटा देखने योग्य थी। गाँव के घरों से पुष्प वर्षा मानो वैदिक धर्म की सर्वोच्चता को स्थापित कर रही थी। इस अवसर पर पृथक् से आर्य समाज के अधिकारियों एवं विद्वानों की संगोष्ठी श्री अशोक आर्य के सान्निध्य में हुई जिसमें मूल सत्यार्थप्रकाश को अक्षुण्ण रखने का व्रत सभी संभागियों ने लिया।

श्री संजय सत्यार्थी एवं उनकी युवा टीम का परिश्रम एवं उत्साह सब ओर नजर आ रहा था। आर्य समाज नेमदारगंज के प्रधान, प्रमण्डलीय सभा के प्रधान अपने अनुभव से कार्यक्रम को निर्देशित कर रहे थे और विद्वान् अतिथियों के आतिथ्य का दायित्व श्री गजेन्द्र प्रसाद एवं उनके पूरे परिवार ने श्रद्धापूर्वक निर्वहन किया।

# मकर संक्रान्ति का मानचित्र

## संकरातड़ा

डॉ. ब्रजमोहन जावलिया

मकर संक्रान्ति सूर्य के मकरराशि में संक्रमण से संबन्धित पर्व है। इस दिन गावों में महिलाएँ गोबर से एक बड़ी आकृति का थापड़ा (उपला) थाप कर उसके बीच में दायें कोने से बांये कोने तक एक रेखा बनाकर उसके समानान्तर ऊपर और नीचे दो रेखाएँ उसी तरह की स्थापित करती हैं। थापड़े पर सर्वत्र छोटी-छोटी अगूंठी के आकार और एक बड़ी अपनी चूडी के आकार की वलयाकार आकृति बनाकर, थापड़े पर गोबर से ही बना एक गोला स्थापित करती हैं। इस निर्मिति का शायद न तो वे कारण बता सकती हैं और न ही किसी विद्वान् ने इस आकृति को व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। अज्ञातकाल से इसे एक पारम्परिक प्रथा मानकर महिलाएँ इस प्रथा को निभाती चली आ रही हैं।

वास्तविकता यह है कि ये संकरातड़े अन्तरिक्ष में क्रान्तिवृत्त में विचरण करने वाले सूर्य के मकर राशि में गति या संक्रमण के मानचित्र हैं। गोबर का गोला सूर्य का, मध्य में बनाई गई रेखा विषुवत् रेखा की और उसके समानान्तर ऊपर और नीचे की ओर बनी रेखाएँ मकर और कर्क रेखाओं की प्रतीक हैं। थापड़े के ऊपरी तल पर अंगुठी के आकार के बिन्दुतारक और नक्षत्र मंडल के, और वलयाकार बड़ा गोला चन्द्रमा को द्योतित करते हैं। थापड़े पर बनी यह सकल आकृति अन्तरिक्ष या नभोमंडल और मकर संक्रान्ति के पर्व का मानचित्र है।

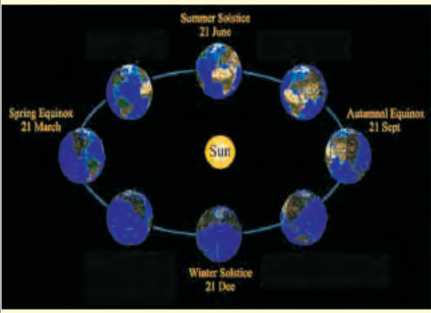


मकर संक्रान्ति का पर्व सूर्य की मकर राशि में गति, संगमन या संक्रमण के प्रारंभिक दिन का पर्व है। पृथ्वी सूर्य के परित= जिस प्रलंब वर्तुलाकार परिधि में भ्रमण करती है, वह परिधि क्रान्तिवृत्त कही जाती है। ऋग्वेद (१/६४/४८) और अथर्ववेद (१०/८/४) में इस क्रान्तिवृत्त या परिधि में पृथ्वी के परिभ्रमण की बारह महीनों की अवधि की बारह प्रधियों का उल्लेख है। इन वेदों में आये मंत्र के अंशरूप 'द्वादश प्रधय श्चक्रमेकं' के आधार पर इन बारह काल्पनिक प्रधियों में नक्षत्रों और तारक मंडलों के आधार पर बनी आकृतियों की समानता जगत् में उपलब्ध पदार्थों से करके जनसामान्य के बोध हेतु उन्हीं पदार्थों के नामों को नक्षत्र मंडल की इन आकृतियों के लिए वरण कर लिया। सूर्य सिद्धान्त (१/२८) में ''तत्त्रिंशता भवेद् राशि भर्गणो द्वादशैव ते' श्लोकांश में इन प्रधियों को राशि या तारक समूह से बनी आकृतियाँ कहा है। ये राशियाँ हैं- मेष (मेंढा), वृष (बैल), मिथुन (युग्म्, दम्पती), कर्क (कैकड़ा), सिंह, कन्या, तुला (तराजू), वृश्चिक (बिच्छू), धनु (धनुष्), मकर (मगर), कुंभ (घड़ा, कलश), और मीन (मछली)।

पृथ्वी जब क्रान्तिवृत्त (परिधि) पर एक प्रधि या राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है तो उस संक्रमण को संक्रान्ति कहते हैं। बारह महीनों में उन बारह राशियों में गति करने से वर्ष में बारह संक्रान्तियाँ होती हैं। मकर संक्रान्ति और कर्क संक्रान्ति छः महीनों के अन्तर से होने वाली ऐसी ही दो संक्रान्तियाँ हैं, पर हमारे यहाँ मकर संक्रान्ति को अधिक महत्व दिया जाता है। ये संक्रान्तियाँ पृथ्वी की इन राशियों पर संक्रमण से संबन्धित हैं, पर लोक में इसे सूर्य के संक्रमण से संबन्धित कहा जाता है।

क्रान्तिवृत्त को उत्तरार्ध और दक्षिणार्ध दो भागों में विभक्त किया गया है और इन्हें उत्तरायण और दक्षिणायण नाम दिया गया है। उत्तरायण की अवधि में सूर्य उत्तरगोल में उदित होकर दिन के तापमान में वृद्धि करता है। दिन का समय अधिक होता और रात का समय घटता जाता है। दक्षिण गोल में, उस समय ठीक इससे विपरीत दिन छोटा और रात बड़ी होती जाती है।

शीत के संकट से मुक्ति दिलाने वाले सूर्य का उत्तरायण में प्रवेश का प्रथम दिवस होने से इस दिन को हमारे यहाँ अधिक महत्व दिया गया है। इस दिन शीत का ह्रास और उष्मा की वृद्धि का आभास होने लगता है। अतः इसे पावन पर्व की मान्यता देना स्वाभाविक है। गत १३५० से भी अधिक वर्षों से अयन चलन की गति में आगा-पीछा होने के कारण संक्रमण मकर संक्रान्ति से बीस दिन पूर्व ही होने लग गया पर सदियों से मनाये जाने वाले इस पर्व की तिथि ज्यों की त्यों चली आ रही है। लोक का निर्णय अटल है। उत्तरायण को हमारे यहाँ देवयान की संज्ञा देकर हजारों वर्षों से लोगों की यह धारणा बनी हुई है कि सूर्य के उत्तरायण में निवास की अवधि में मृत्यु प्राप्त व्यक्ति की आत्मा सूर्यलोक में प्रविष्ट होकर प्रकाश के मार्ग का अनुसरण करती है। इस मान्यता के आगे मनुष्य के पाप-पुण्य युक्त कर्मों का कोई महत्व नहीं रह जाता।

मंगलप्रद ऋतु का प्रारंभिक दिन होने के कारण इस दिन किये गये दान धर्म को भी अधिक महत्व दिया जाता है। घर आये अभ्यागतों को अन्नदान और वस्त्रादिक दान कर लोग संतुष्ट होते हैं। बच्चों और जवानों को आनन्द दड़ी घोटे, गिल्ली डंडे या आजकल के संशोधिक क्रिकेट फुटबाल आदि खेल खेलने और पतंग उड़ाने में मिलता है। ये सभी क्रीडाएँ अंतरिक्ष में सूर्य की लीला के अनुरूप ही तो हैं।

१०१, भटियाणी चोहट्टा
उदयपुर

# भ्रूण हत्या महापाप

## एक मार्मिक अपील

वानप्रस्थ सत्यनारायण लाहोटी

# बेटी की करुण पुकार

कहती बेटी बाँह पसार
मुझे चाहिए प्यार, दुलार

बेटी की अनदेखी क्यूँ
करता है निष्ठुर संसार

सोचो जरा हमारे बिन
बसा सकोगे घर-परिवार ?

गर्भ से लेकर यौवन तक
मुझ पर लटक रही तलवार

मेरी व्यथा, वेदना का
अब हो स्थाई उपचार

**माँ** ! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है.......... ? मुझ अबोली, अजन्मी, असहाय को काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े करवा कर बेरहमी से निर्मम हत्या करवा रही हो।

ममतामयी माँ, तू डाकिन क्यों बन रही है ? अपनी एक अंगुली काटकर देख... क्या सह लेगी... ? मुझे मत मार, कुकर्मों के फल भोगने पड़ेंगे।

**पिता** ! आप तो परमेश्वर के समान हो फिर क्यों मुझ निर्दोष की निर्दयतापूर्ण हत्या कर हत्यारे बन रहो हो ?

**डॉक्टर** ! क्यों चंद रुपयों के लालच में लाचार होकर जल्लाद से बदतर नर-पिशाच बन रहे हो ? क्यों अपनी शिक्षा को मानव विकास में लगाने के बजाय मानव के सर्वनाश में लगा रहे हो ? जो कोख में कत्ल कर मेरे शरीर, हाथ, पैर, सिर आदि अंगों को काट रहे हो, क्यों अपना व अपने परिवार का सर्वनाश करने पर उतारू हो रहे हो... ? ऐसा मत करो।

लिंग सोनोग्राफी ( परीक्षण ) करने वालो ! क्यों मेरी हत्या में सहयोगी बनकर प्रकृति का सन्तुलन बिगाड़ रहे हो ? क्यों पाप के भागीदार बन रहे हो ?

**समाज** ! मैं आपकी बेटी हूँ.......मुझे बचाओ। मैं बचूँगी तो ही दुनिया बचेगी................मुझे मत मारो, कोख में कत्ल कर क्यों पाप कर्मों को प्राप्त कर दर्दनाक नारकीय दुःखों को आमंत्रण दे रहे हो ?

आप सोचो समझो और मुझे बचाओ ही...

एक अबोली बेटी

# आयुर्वेदिक दोहे

१. जहाँ कहीं भी आपको काँटा कोई लग जाय।
दूधी पीस लगाइये काँटा बाहर आय।।

२. मिश्री कत्था तनिक सा, चूसें मुँह में डाल।
मुँह में छाले हों अगर दूर होंय तत्काल।।

३. पोदीना औ इलायची लीजे दो-दो ग्राम।
खायें उसे उबाल कर, उल्टी से आराम।।

४. छिलका ले इलायची, दो या तीन ग्राम।
सिर दर्द मुँह सूजना, लगा होय आराम।।

५. अण्डी पत्ता वृन्त पर चूना तनिक मिलाय।
बार-बार तिल पर घिसे तिल बाहर आ जाय।।

६. गाजर का रस पीजिए आवश्यकतानुसार।
सभी जगह उपलब्ध यह, दूर करे अतिसार।।

७. खट्टा दामिड़ रस, दही, गाजर, शाक पकाय।
दूर करेगा अर्श को, जो भी इसको खाय।।

८. रस अनार की कली का, नाक बूँद दो डाल।
खून बहे जो नाक से, बंद होय तत्काल।।

९. भून मुनक्का शुद्ध घी, सैंधा नमक मिलाय।
चक्कर आना बंद हों, जो भी इसको खाय।।

१०. मूली की शाखों का रस, ले निकाल सौ ग्राम।
तीन बार दिन में पियें पथरी से आराम।।

११. दो चम्मच रस प्याज का, मिश्री संग पी जाय।
पथरी केवल बीस दिन, में गल बाहर जाय।।

१२. आधा कप अंगूर रस, केसर जरा मिलाय।
पथरी से आराम हो, रोगी प्रतिदिन खाय।।

१३. सदा करेला रस पिये, सुबह हो औ शाम।
दो चम्मच की मात्रा, पथरी से आराम।।

१४. एक डेढ़ अनुपात कप, पालक रस चौलाई।
चीनी संग लें बीस दिन, पथरी दे न दिखाई।।

१५. खीरे का रस लीजिये, कुछ दिन तीस ग्राम।
लगातार सेवन करें, पथरी से आराम।।

१६. बैंगन भुर्ता बीज बिन, पन्द्रह दिन गर खाय।
गल गल करके आपकी, पथरी बाहर आय।।

१७. लेकर कुलथी दाल को, पतली मगर बनाय।
इसको नियमित खाय तो, पथरी बाहर आय।।

१८. दामिड़ छिलका सुखाकर, पीसे चूर बनाय।
सुबह शाम जल डाल कम, पी मुँह बदबू जाय।।

१९. चूना घी और शहद को, ले सम भाग मिलाय।
बिच्छू का विष दूर हो, इसको यदि लगाय।।

२०. गरम नीर को कीजिए, उसमें शहद मिलाय।
तीन बार दिन लीजिये, तो जुकाम मिट जाय।।

२१. अदरक रस मधु भाग सम, करें अगर उपयोग।
दूर आपसे होयगा कफ और खाँसी रोग।।

२२. ताजे तुलसी पत्र का, पीजे रस दस ग्राम।
पेट-दर्द में पायेंगे कुछ पल का आराम।।

२३. बहुत सहज उपचार है, यदि आग जल जाय।
मींगी पीस कपास की, फौरन जले लगाय।।

२४. रूई जलाकर भस्म कर, वहाँ करें भुरकाव।
जल्दी ही आराम हो, होय जहाँ पर घाव।।

२५. नीम पत्र के चूर्ण में, अजवायन इक ग्राम।
गुड़ संग पीजै पेट के, कीड़ों से आराम।।

२६. दो-दो चम्मच शहद औ रस ले नीम का पात।
रोग पीलिया दूर हो, उठे पिये जो प्रात।।

२७. मिश्री के संग पीजिये रस ये पत्ते नीम।
पेचिश के ये रोग में, काम न कोई हकीम।।

२८. हरड़-बहेड़ा-आँवला चौथी नीम गिलोय।
पंचम जीरा डालकर सुमिरन काया होय।।

प्रेषक- डी. के. भगत, दिल्ली, चलभाष- ०९३११४०६८१०


## संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ ( ₹ ११,००० )

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए.

# साास को जहर

## कथा सरित

बहुत समय पहले की बात है चीन में रहने वाली एक लड़की लीली का विवाह हुआ। ससुराल में उसके पति के अलावा उसकी सास भी रहती थी। दुर्भाग्य से सास बहू की कभी पटी नहीं। लीली को अनुभव हुआ कि वह कुछ भी कर ले पर सास के अनुकूल नहीं रह सकती। उनके व्यक्तित्व बिल्कुल अलग अलग थे। सास की बहुत सारी हरकतों से लीली को अंदर ही अंदर गुस्सा आता था। निरन्तर रूप से सास लीली की आलोचना करती रहती थी। दिन सप्ताह, महीने गुजरने लगे परन्तु लीली व उसकी सास का झगड़ना बन्द नहीं हुआ।

चीन के प्राचीन सांस्कृतिक परिदृश्य के अनुसार बहू के रूप में लीली को अपनी सास की हर आज्ञा को मानना ही उसका कर्तव्य था। परन्तु इस सबसे घर का माहौल बिगड़ता जा रहा था और सदा एक तनाव-सा वातावरण बना रहता था। इस सबसे बेचारे पति की स्थिति बहुत खराब थी और वह भी तनाव में रहता था। अन्त में लीली की सहनशीलता की सीमाएँ पार हो गईं और उसने कुछ करने

का निश्चय किया। लीली अपने पिता के बहुत अच्छे मित्र मिस्टर वांग के पास गई जो कि जड़ी-बूटियाँ बेचता था। लीली ने उसे सारी स्थिति से अवगत कराया और कहा कि वह उसे थोड़ा सा जहर दे दे जिससे कि वह इस समस्या से सदा-सदा के लिए मुक्त हो जाए। वांग ने कुछ देर तक सोचा और फिर लीली से कहा कि मैं तुम्हारी समस्या निपटाने में तुम्हारी मदद करूँगा परन्तु तुम्हें मेरी बात अक्षरशः माननी पड़ेगी। लीली ने अपनी सहमति जताई कि मैं वही करूँगी जैसाकि आप मुझे करने को कहेंगे।

वांग पीछे के कमरे में गया और जड़ी-बूटियों का एक पैकेट लेकर के आया । उसने लीली से कहा कि तुम अपनी सास से छुटकारा पाने के लिए शीघ्र असर करने वाला जहर इस्तेमाल नहीं कर सकती क्योंकि उससे लोगों को तुम पर संदेह हो जायेगा। अतः मैं अच्छी मात्रा में तुम्हें ऐसी जड़ी-बूटी दे रहा हूँ जो कि उसके शरीर में धीरे-धीरे जहर का निर्माण करेगी। तुम एक दिन छोड़कर एक दिन स्वादिष्ट खाना बनाना और उसमें थोड़ी सी जड़ी-बूटी मिला देना। इसके साथ ही एक काम करना कि कोई तुम पर संदेह नहीं करे इसके लिए तुम अपनी सास के साथ बहुत ही मित्रतापूर्ण व अच्छा व्यवहार करना। तुम उसके साथ इन दिनों कोई बहस मत करना उसकी हर इच्छा का पालन करना और उसके साथ ऐसा व्यवहार करना कि जैसे तुम्हारी सास कोई रानी हो। जब तुम ऐसा करोगी तो जहर का असर होने पर जब सास की मृत्यु होगी तो तुम पर कोई भी संदेह नहीं करेगा।

लीली बहुत प्रसन्न हुई। उसने वांग को बहुत धन्यवाद दिया और सास को मारने का विचार साथ लेकर घर पहुँची। जैसा-जैसा वांग ने कहा था लीली ने ठीक वैसा ही किया। उसने अपने गुस्से को नियंत्रित किया। वह अपनी सास की हर आज्ञा का पालन करती थी और उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करती थी जैसे कि वह उसकी अपनी माँ हो। हाँ! वह उसके खाने में वांग द्वारा दी गई जड़ी-बूटी

मिला देती थी। धीरे-धीरे करके छह माह बीत गए सास की मृत्यु तो नहीं हुई परन्तु घर का सारा माहौल एकदम बदल गया। अब लीली को अपने गुस्से पर इस प्रकार नियंत्रण का अभ्यास हो गया था कि वह अपसेट नहीं होती थी। पिछले छह महीनों में उसने अपनी सास के साथ कोई बहस नहीं की। प्यार भरा बर्ताव किया। सास के व्यवहार में भी बहुत परिवर्तन आ गया। वह अब लीली का बहुत ख्याल रखती थी और उसे स्नेह व ममता भी प्रदान करने लगी व लीली को अपनी बेटी की तरह चाहने लगी। अपने मित्रों व रिश्तेदारों के बीच वह गर्व से कहती थी कि उसकी बहू जैसी बहू पाना बहुत मुश्किल है। कुल मिलाकर के दोनों ओर से व्यवहार ऐसा हो गया कि दोनों सगी माँ-बेटी की तरह रहने लगीं। इस सबसे लीली का पति बहुत प्रसन्न था। अब लीली सास की मौत नहीं चाहती थी। अतः वांग के पास गई और उसे अपनी सहायता करने के लिए कहा। उसने कहा कि मुझे ऐसी दवा दो ताकि वो सास को दिए जा रहे जहर की काट कर सके क्योंकि मेरी सास तो इतनी अच्छी है कि मैं तो उसे माँ की तरह प्यार करने लगी हूँ। मैं बिल्कुल नहीं चाहती कि जो जहर उसे दिया था उसका असर हो और वह मर जाये। वांग के चेहरे पर मुस्कराहट आई और वह बोला-लीली चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। मैंने तुम्हें जहर कभी नहीं दिया। जो जड़ी-बूटी मैंने तुम्हें दी थी उसमें स्वास्थ्यवर्द्धक गुण थे। वस्तुतः जहर तो तुम्हारे अपने दिमाग में था और तुम्हारे व्यवहार में था। पर अब वह बिल्कुल साफ हो गया है। क्योंकि तुमने अपनी सास को प्यार करना आरम्भ कर दिया है।

**प्रस्तुति- ए.भाटिया**
abhatia146@gmail.com

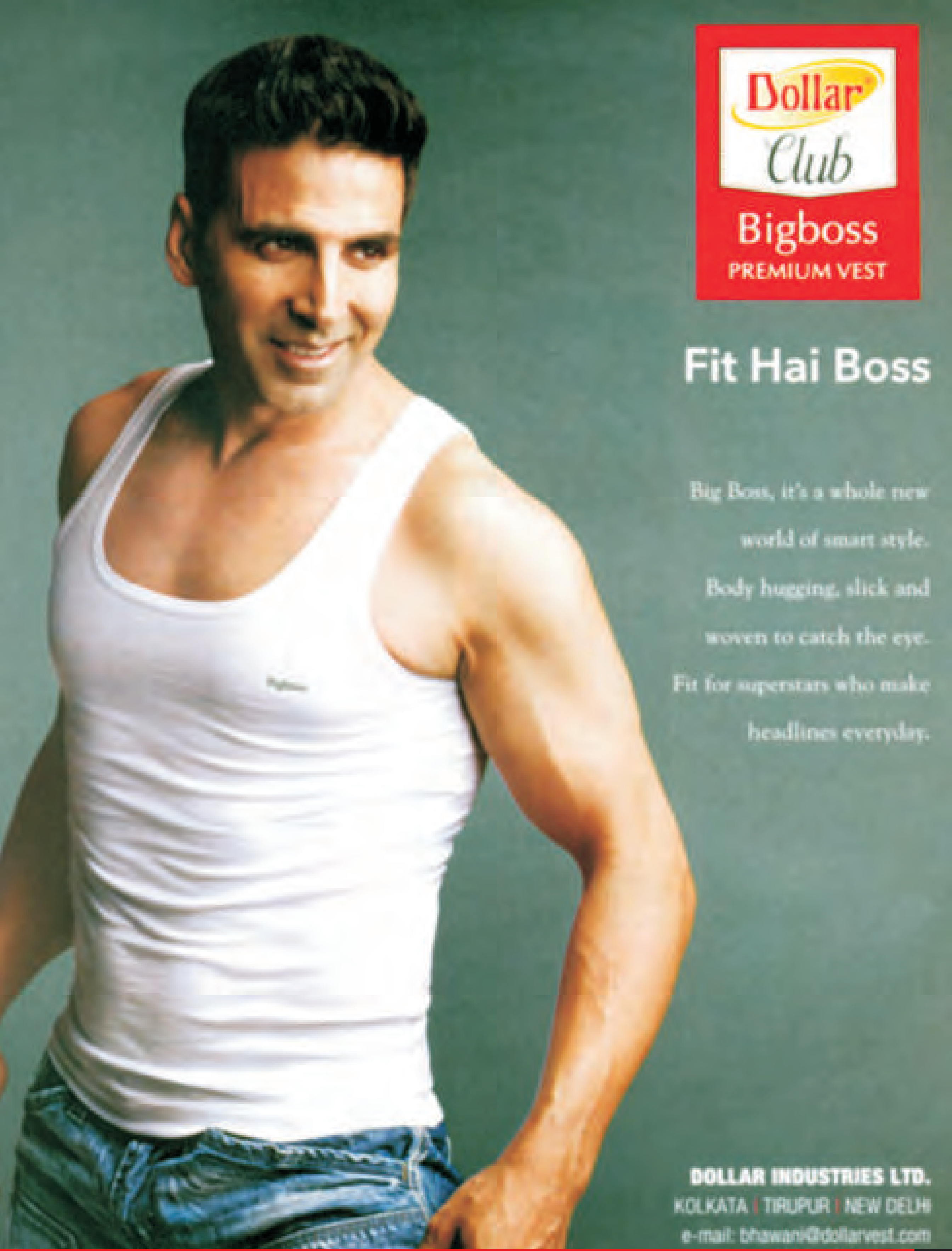
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new
world of smart style.
Body hugging, slick and
woven to catch the eye.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 January-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

# मन्त्री कैसे हों

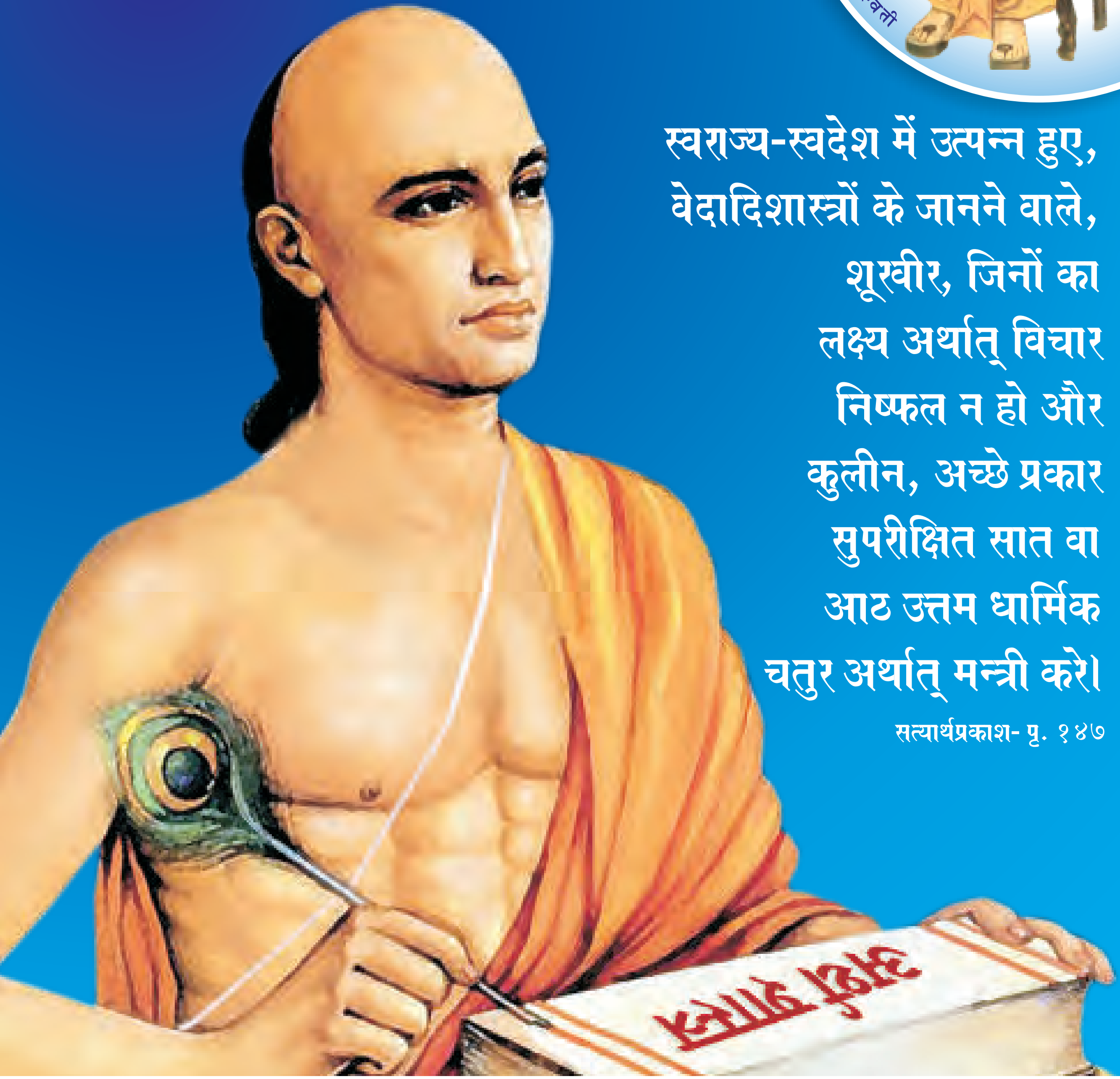

स्वराज्य-स्वदेश में उत्पन्न हुए, वेदादिशास्त्रों के जानने वाले, शूरवीर, जिनों का लक्ष्य अर्थात् विचार निष्फल न हो और कुलीन, अच्छे प्रकार सुपरीक्षित सात वा आठ उत्तम धार्मिक चतुर अर्थात् मन्त्री करे।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. १४७

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य